श्री नवकार महामंत्र कल्प

मोती की माला

तथा

श्री गुरुदेव स्तवनावली

द्रव्य सहायक—

श्रीमान् बाबू मुलतानचद गोलछा

प्रकाशक—

श्री जैन श्वेताम्बर मित्रमडल

कलकत्ता

—कृतज्ञता ज्ञापन—

यह पुस्तक श्रीमान् मुल्तानचंदजी गोलछा के द्रव्य सहायता से प्रकाशित हुई है। हम उन्हें इसके लिये हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

पुस्तक संग्रह करने में कई एक पुस्तकों से सहायता ली गई है। उन पुस्तकों के लेखक और प्रकाशक भी धन्यवाद के पात्र हैं।

पाठकों से प्रार्थना है कि इस पुस्तक का पूरा उपयोग करें। अगर कोई अशुद्धि रह गई हो तो उसे सुधार कर पढ़ें।

हीरालाल लूणिया
मन्त्री
श्री जैन श्वेताम्बर मित्रमंडल
प्रकाशक

※ श्री नवकार महामन्त्र ※

—卐कल्प卐—

ॐ नम सिद्धेभ्य ॐ नम पञ्च परमेष्ठिभ्यो नम श्री नवकार महामन्त्र कल्प लिख्यत।

आत्म शुद्धि मत्र

॥ ॐ ह्रीँ नमो अरिहन्ताण ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो सिद्धाण ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो आयरियाण ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाण ॥

॥ ॐ ह्री नमो लोए साहूण ॥१॥

मत्रका जाप करनेवालेको प्रथम आत्मशुद्धिके लिये ऊपर लिखे हुए मत्रका एक हजार आठ जाप कर लेना चाहिये बादमे प्रवेश करना।

॥ इन्द्राह्वानन मत्र ॥

॥ ॐ ह्रीँ वज्राधिपतये आँ ह्राँ ग्ँ ह्रँ ह्राँ श्रूँ ह्र क्ष ॥२॥

इस मन्त्रका इक्कीस वार जाप करके प्राण प्रतिष्ठा करना चाहिये और बादमें इसी मन्त्र द्वारा निजकी चोटि (शिखा) जनेऊ (उत्तरा सङ्ग) कङ्कण, कुण्डल, अगुठी व कपड़े आदिको मन्त्रित करके सर्व सामग्रीको शुद्ध करना चाहिये।

॥ कवच निर्मल मन्त्र ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ वद वद वाग्वादिन्यै नमः स्वाहा ॥३॥

इस मन्त्र द्वारा कवचको निर्मल करना चाहिये।

॥ हस्त निर्मल मन्त्र ॥

॥ ॐ नमो अरिहन्ताण श्रुतदेवि प्रशस्त हस्ते हुँ फट् स्वाहा ॥४॥

इस मन्त्र द्वारा निजके हाथोंको धूपके धूएँपर रखकर निर्मल करना चाहिये।

॥ काय शुद्धि मंत्र ॥

॥ ॐ नमो ॐ ह्रीँ सर्वपाप क्षयकरी ज्वाला सहस्र प्रज्वलिते मत्पाप जहि जहि दह दह क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षौँ क्षः क्षीरधवले अमृत सभवे बधान बधान हूँ फट् स्वाहा ॥५॥

इस मंत्र द्वारा शरीरको शुद्ध बनाना चाहिये और अन्तः-करणको भी निर्मल रखना, जिससे तत्काल सिद्धि होगी।

॥ हृदय शुद्धि मंत्र ॥

ॐ क्षमेण पवित्रेण पवित्रीकृत्य आत्मानं पुनिमहे स्वाहा ॥६॥

इस मंत्र द्वारा हृदय-अन्तःकरणको शुद्ध करना चाहिये। ईर्ष्या, द्वेष, कुविकल्प, क्रोध, मान, माया, लोभका त्याग करना, मिथ्या नहीं बोलना इत्यादि कार्योंसे दूर रहना।

॥ मुख पवित्र करण मंत्र ॥

ॐ नमो भगवते श्रीं ह्रीं चन्द्रप्रभाय चन्द्र महिताय चन्द्र मूर्त्तये सर्व सुख प्रदायिन्यै स्वाहा ॥७॥

इस मंत्र द्वारा निजके मुख कमलको पवित्र बनाना, गम्भीरता, सरलता, नम्रता आदिका भाव धारण करना।

॥ चक्षु पवित्र करण मंत्र ॥

ॐ ह्रीं क्षीं महामुद्रे कपिलशिखे हुँ फट् स्वाहा ॥८॥

इस मंत्र द्वारा निजके नेत्रोंको पवित्र करना और नेत्रोंमें स्नेहभाव सरलताका प्रकाश हो इस प्रकार नेत्र शुद्धि करना।

॥ मस्तक शुद्धि मन्त्र ॥

ॐ नमो भगवती ज्ञान मूर्त्तिः सप्त शत क्षुल्लकादि महाविद्याधिपति विश्व रूपिणी ह्रीँ ह्रैँ क्षोँ क्षौं ॐ शिरस्त्राण पवित्री करण ॐ नमो अरिहन्ताण हृदय रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा ॥६॥

इस मन्त्र द्वारा मस्तक निर्मल करना और शुद्ध हृदयसे यथासाध्य आराधन करना जिससे मन्त्र तत्काल सिद्ध होता है।

॥ मस्तक रक्षा मंत्र ॥

ॐ नमो सिद्धाण हर हर विशिरो रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ॥१०॥

इस मन्त्र द्वारा मस्तक रक्षाकी भावना भायी जाय।

॥ शिखा बन्धन मंत्र ॥

ॐ नमो आयरियाण शिखा रक्ष हूँ फट् स्वाहा ॥११॥

इस मन्त्र द्वारा शिखाको पवित्र करके बांधना चाहिये, बांधते समय गांठ न देना यूंही लपेटना और स्थिर कर देना।

॥ मुख रक्षा मन्त्र ॥

ॐ नमो उवज्झायाण एहि एहि भगवति वज्रऽकवच वज्रिणि रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ॥१२॥

इस मन्त्र द्वारा मुखके तमाम अवयवोंकी रक्षा भावना भायी जाय।

॥ इन्द्रस्य कवच मन्त्र ॥

ॐ नमो लोए सव्व साहूण क्षिप्र साधय साधय वज्रहस्ते शूलिनि दुष्ट रक्ष रक्ष आत्मान रक्ष रक्ष ह फट् स्वाहा ॥१३॥

इस मन्त्र द्वारा देव भय व अन्य कोइ उपद्रव उपस्थित न होनेकी भावना भायी जाय।

॥ परिवार रक्षा मन्त्र ॥

ॐ अरिहय सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ॥१४॥

इस मन्त्र द्वारा कुटुम्ब-परिवारकी रक्षाके लिये प्रार्थना करना जिससे मंत्र साध्य समयमें कौटम्बिक उपद्रव उपस्थित न हो और मन्त्र साधना निर्विघ्नतया सिद्ध हो सके।

॥ उपद्रव शांति मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ क्ष्रीँ फट् स्वाहा किटि किटि घातय घातय

पर विद्यान् छिन्दि छिन्दि परं मन्त्रान् भिन्द्रि भिन्द्रि क्षःफट् स्वाहा ॥१५॥

इस मन्त्र द्वारा मन्त्र साधनमें दूसरों की ओर से मन्त्र बलसे किसी प्रकारका कष्ट आनेवाला हो तो वह रुक जाता है। अतः सर्व दिशा के सर्व प्रकारके उपद्रवादिको रोकनेके हेतु इस मन्त्रका जाप करना चाहिये, और बादमें सकली करण करके विधि सहित जाप किया जाय तो अवश्य कार्य सिद्ध होगा।

॥ पञ्च परमेष्टि मन्त्र ॥

॥ ॐ अ सि आ उ सा नमः ॥१६॥

इस पञ्च परमेष्टि जाप्यका मुद्रा सहित ध्यान करे तो मनो-वाञ्छित फलकी प्राप्ति होती है। यह महाकल्याणकारी मन्त्र है। इसमें अनेक प्रकारकी सिद्धियां समाइ हुई हैं। जो कर्म क्षय करनेके निमित्त इस मन्त्रका ध्यान करते हैं उनको आवृत से करना चाहिये, और इसी तरह शङ्खावृत विधिसे जाप करनेका भी बहुत माहात्म्य बताया है। जो शङ्खावृत्त विधिसे जाप करते हैं उनको शाकिनि, डाकिनी, भृत, प्रेत आदिसे भय-उपद्रव प्राप्त नहीं होता।

शङ्खावृत्तको मध्यमा अङ्गुलीके बीचके पेरवसे गिनना चाहिये, जिसकी समझ शङ्खावृत्त चित्रमें दी गई है। जहां एकका अङ्क है वहींसे शुरुआत करना और बारहवें अङ्को तक गिनना, फिर एक अङ्कसे जारी करना। इस तरह नौ वक्त

गिननेसे एक माला पूरी हो जाती है, और शङ्खावृत्तसे गिनने वाला उत्कर्ष स्थितिको पहुचता है।

॥ महारक्षा सर्वोपद्रव शांति मन्त्र ॥

॥ नमो अरिहन्ताण शिखाया ॥
॥ नमो सिद्धाण मुखावरणे ॥
॥ नमो आयरियाण अङ्गरक्षाया ॥
॥ नमो उवज्झायाण आयुद्धं ॥
॥ नमो लोए सव्वसाहूण मौर्वीए ॥
॥ एसो पञ्च नमुकारो पादतले ॥
॥ वज्र शिला सव्व पावप्पणासणो ॥
॥ वज्र मय प्राकार चतुर्दिक्षु मग- ॥
॥ लाणचसव्वेसिंखदिराङ्गारखातिका ॥
॥ पढम हवइ मङ्गलं ॥
॥ प्रकारो परिवज्रमय ढाकण ॥१७॥

सकली करण करके ध्यान करना चाहिये जिससे सर्व प्रकारके विघ्न शान्त हो जाय और इच्छित फल प्राप्त हो।

॥ महामन्त्र ॥

ॐ णमो अरिहन्ताण, ॐ हृदय रक्ष रक्ष हुँ फट्

स्वाहा। ॐ णमो सिद्धाण ह्रीँ शिरो रक्ष रक्ष हँ फट् स्वाहा। ॐ णमो आयरियाण हूँ शिखा रक्ष रक्ष हूँ फट स्वाहा॥ ॐ णमो उवज्झायाण हैँ एहि एहि भगवति वज्रकवचे वज्रपाणि रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। ॐ णमा लोए सव्व साहूण ह्र। क्षिप्र साधय साधय वज्रहस्ते शूलिनि दुष्टान रक्ष रक्ष हँ फट् स्वाहा। एसो पञ्च नमुक्कारो वज्रशिलाप्राकारः सव्व पावप्पणासणो अमृतमयो परिखा। मगलाणञ्च सव्वेसिं महा वज्राग्नि प्राकार' पढम हवइ मङ्गलम् ॥१८॥

आत्म रक्षा, अथवा कर्म क्षय निमित्तआदिमें यह मन्त्र अत्यन्त चमत्कारी है। मनोवाञ्छना पूर्ण करनेवाला व सर्व प्रकारकी ऋद्धि सिद्धिको देनेवाला है।

॥ वशीकरण मन्त्र (१)॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो अरिहन्ताण ॥

॥ ॐ ह्री नमो सिद्धाणं ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो आयरियाण ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाण ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्व साहूण ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो दसणस्स ॥

॥ अमुकमम वशीकुरुकुरु स्वाहा ॥१६॥

इस मन्त्रको साध्य करनेके बाद जिसको आधीन करना हो "अमुक"के बजाय नाम लेकर जाप्य किया जाय सवालक्ष जाप्य पूर्ण होने पश्चात् इकीस बार जाप्य कर और प्रति जाप्य वस्त्रे या पघडीके पल्ले ग्रन्थी (गांठ) दते जाय तो कार्यकी सिद्धि होती है।

॥ वशीकरण मन्त्र (२) ॥

॥ ॐ नमो अरिहन्ताण ॥
॥ ॐ नमो सिद्धाण ॥
॥ ॐ नमो आयरियाण ॥
॥ ॐ नमो उवज्झायाण ॥
॥ ॐ नमो लोए सव्व साहूण ॥
॥ ॐ नमो नानस्स ॥
॥ ॐ नमो दसणस्स ॥
॥ ॐ नमो चारित्तस्स ॥
॥ ॐ ह्री त्रैलोक्य वशंकरो ॥
॥ ह्रीँ स्वाहा ॥२०॥

सकली करण करके इस मन्त्रसे साध्य करने बाद जलादि मन्त्रित करक पीलानेसे प्रयोजन सिद्ध होता है। लेकिन अकार्यके हेतु यह मन्त्र काममें न लिया जाय समकितवन्त प्राणीको सुकार्यकी तरफ ही दृष्टि रखना चाहिये।

॥ वशीकरण मन्त्र (३) ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्व साहूण ॥२१॥

इस मन्त्रको सिद्ध कर उत्तर क्रियामें ऐँ ह्रीँ क साथ जाप्य करके वस्त्रे ग्रन्थी देता जाय और ॥१०८॥ बार ग्रन्थी को शिला पर फटकारता जाय तो कार्य सिद्ध होता है। वस्त्र नया और शुद्ध होना चाहिये।

॥ बन्दीगृह मुक्त मन्त्र ॥

॥ णहुमाव्वसएलोमोण ॥

॥ णयाज्झानउ मोण ॥

॥ णयारियआ मोण ॥

॥ णद्धासि मोण ॥

॥ णताहरिअ मोण ॥२२॥

इस मन्त्रको विपयास कहत हैं, इसको सिद्ध करने बाद जाप किया जाय तो बन्दी खानेस तत्काल मुक्त होता है। चित्त स्थिर रख कर जाप्य करे तो सिद्धि होती है।

॥ सङ्कटमोचन मन्त्र ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो अरिहन्ताण ॥
॥ ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाण ॥
॥ ॐ ह्रीँ नमो आयरियाण ॥
॥ ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाण ॥
॥ ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्व साहूण ॥२३॥

इस मन्त्रका साढ़े बारह हजार जाप्य करे और बादमें नवाक्षरी मन्त्रका जाप करे सो बताते हैं।

॥ नवाक्षरी मन्त्र ॥

॥ ॐ ह्री नमः अर्हं क्षीँ स्वाहा ॥२४॥

इस मन्त्रका उच्चार रहित जाप करे तो दुष्ट, तस्कर आदि भय मिट जाता है, और अनावृष्टिमें भी इस मन्त्रका उपयोग करे तो चमत्कार बतानेवाला है। महा भयके समय या मार्गमें चोरादि भय निवारणके लिये इसका जाप्य करता जाय और चारों दिशामें फूंक देता जाय तो भय मिट जाता है।

॥ सर्व सिद्धि मन्त्र ॥

ॐ अरिहन्त सिद्ध आयरिय उवज्झाय सव्वसाहू, सव्वधम्मतिथ्थयराण, ॐ नमो भगवइए, सुयदेवयाए,

संति देवयाण सव्व पवयण देवाणं, पञ्चलोगपालाण ॐ हीँ अरिहन्त देव नमः ॥२५॥

इस मन्त्रको साध्य करनेके लिये देवस्थान या अन्यत्र शुद्ध भूमि हो वहां बैठना चाहिये, और सिद्ध करनेके बाद यह मन्त्र सर्व कार्यमें सिद्धिदायक होता है। कठिन कार्यके समय विधि सहित जाप करनेसे कष्ट मिटता है, और सात बार मन्त्र बोल कर वस्त्रके गांठ लगाता जाय तो तत्काल चमत्कार बताता है। व्याघ्रादि हिन्सक प्राणीका या अन्य प्रकारका भय उपस्थित हुवा हो तो नष्ट हो जाता है।

॥ वैरनाशाय मन्त्र ॥

॥ णंहुसाव्वस एलो मोण ॥
॥ णयाज्झारउ मोण ॥
॥ णयारियआ मोण ॥
॥ णद्धासि मोण ॥
॥ णताहरिअ मोण ॥२६॥

इस विपर्यास मन्त्रका कथन पहले कर चुके हैं। लेकिन विधान दूसरा होनेसे फिर उल्लेख किया जाता है। इस मन्त्रका सवा लक्ष जाप्य विधि सहित करनेके बाद चतुर्थी अथवा चतुर्दशीके दिन साधना करे, और सिद्धि कियाके बाद

परमेष्टि नमस्कार करके धूलको चिहुटी भर कर प्रक्षेप करनेसे वैरभाव-शत्रुता मिट जाती है, और परस्पर प्रेमभाव बढ़ता है।

॥ मन चिन्तित फलदाता मन्त्र ॥

ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रौँ ह्रः अ. सि. आ उ. सा. नमः ॥२७॥

इस मन्त्रकी एक माला प्रतिदिन फेरना चाहिये जो इसका आराधन करगे उनको मन चिंतित फलकी प्राप्ति होगी, लेकिन सिद्धि अवश्य कर लेना चहिये। विना सिद्धि किये मन्त्र फल नहीं देते।

॥ लाभदायक मन्त्र ॥

॥ ॐ नमो अरिहन्ताण ॥
॥ ॐ नमो सिद्धाण ॥
॥ ॐ नमो आयरियाण ॥
॥ ॐ नमो उवज्झायाण ॥
॥ ॐ नमो लोए सव्व साहूण ॥
॥ ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रौँ ह्रः स्वाहा ॥२८॥

इस मन्त्रको पदनावृत्तसे गिनना चाहिये, उङ्गलीयों पर आवृत्तसे भी गिन सकते हैं। उच्चार रहित जाप किया जाय

और स्थिर चित्तसे किया जाय तो लाभदाई है। आवृत्तका चित्र पश्चे मे दिया है, सो "माला व आवृत्त विचार"के प्रकरणमें देख लेना।

पटनावृत्तके लिये ऐसा भी सुना है कि प्रथम पद ब्रह्मरन्ध्र में, दूसरा ललाट, तीसरा कन्ठ-पिञ्जर, चौथा हृदयमे और पांचवा नाभि कमलमे स्थित कर इस मन्त्रका ध्यान करे।

दूसरी तरकीब पटनावृतकी यह है कि, ब्रह्मरन्ध्र, ललाट, चक्षु, श्रवण और पाचवां मुख, इन पर ध्यान लगावे।

॥ अङ्गरक्षा मन्त्र ॥

पदम हवइ मगलं बज्रमयी
शिला मस्तकोपरि,
नमो अरिहन्ताण अगुष्ठयोः
नमो सिद्धाण तर्जन्याः,
नमो आयरियाण मध्यमयो.
नमो उवज्झायाण अनामिकयो
नमो लोंए सव्वसाहूण कनिष्टकयोः
एसोपञ्च नमुक्कारो वज्रमय प्राकार
सव्व पारप्पणासणो जल भृता-
खातिकां, मङ्गलाणच सवेस्सि

खदिराङ्गारपूर्णा खातिका, आत्मान
निश्चिन्त्य महाशकला करण ॥ २९ ॥

इस मन्त्रका विधान हमारे समझमें बराबर नहीं आया अत गुरुगम्य जानना चाहिये। इसमें सकली करण भी आ गया है।

॥ अनुपम मन्त्र ॥

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा स्वाहा ॥ ३० ॥

यह मन्त्र अनुपम है, चित्त स्थिर रख कर काय शुद्धि कर विधि सहित साध्य करे तो अनुपम फलदाता सर्व सिद्धि दायक यह मन्त्र है।

॥ सर्व कार्य सिद्धि मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं अ सि आ उ सा नम ॥३१॥

यह मन्त्र सर्व कार्यकी सिद्धि करनेवाला है। शुद्धोच्चार पूर्वक स्थिर चित्तसे आराधन किया जाय बहुत आनन्द-दायक है।

॥ बन्दीमुक्त मन्त्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताण झ्म्ल्व्यूँ नम'
ॐ नमो सव्व सिद्धाण झ्म्ल्व्यूँ नमः

ॐ नमो आयरियाण र्म्ल्व्यूं नमः

ॐ नमो उवज्झायाण ह्म्ल्व्यूं नमः

ॐ नमो लोएसव्वसाहूण क्ष्म्ल्व्यूं नमः अमुकस्य बदिनो मोक्ष कुरु कुरु स्वाहा ॥ ३२ ॥

इस मन्त्रको साधन करते समय पट्ट पर यह मन्त्र अष्टगन्धसे लिखना, पट्ट सोने का हो, चादीका, या तांबका जैसी शक्ति हो लेवे। मन्त्र वाले पट्ट को बाजोठ (पटिया) पर स्थापित करे। आलम्बन में श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी प्रतिमा अथवा मनमोहक चित्र स्थापित कर सामने बैठे चित्र निजकी नासिकाके सामने यान ऐसा मध्य में स्थापित कर कि जो ठीक मध्यहीमे आवे, बैठ कर धूप दीप आदि सामग्री जयणा सहित काममें लेव तत्पश्चात् पांच सौ पुष्प सफेद जाइ के लेकर एक पुष्प हाथ में लेता जाय और मन्त्र बोलता जाय, और मन्त्र पूर्ण होत ही पुष्प को ऊर्ध्वस्थितिमें मन्त्रक उपर चढाता जाय तो बन्दीवास का तत्काल छुटकारा होता है।

बन्दीवान के लिये दूसरा कोइ जाप कर तो भी यह मन्त्र काम देता है। बहुत चमत्कारी है।

॥ स्वप्ने शुभाशुभं कथित मन्त्र ॥

मन्त्र नम्बर ३२ जो उपर बता चुके हैं। इसको खड़े खड़े कायोत्सर्गमें स्थित रह कर ध्यान करे और फिर किसीसे बोले

बिना मौन पने भूमि शैय्या पर पूर्व दिशाकी तरफ मस्तक रख कर सो जाय तो स्वप्नमें शुभाशुभ फलका भास होता है।

॥ विद्याध्ययन मन्त्र ॥

अरिहन्त सिद्ध आयरिय,
उवज्झाय सव्व साहू ॥ ३४ ॥

इस मन्त्रका जाप करनेसे विद्याध्ययनमें सहायता मिलती है। द्रव्य प्राप्ति व सुखके करने वाला है।

॥ आत्मचक्षु परचक्षु रक्षा मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ नमो अरिहन्ताण पादौ रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाण कटिं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीँ नमो आयरियाण नाभिं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाण हृदय रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्वसाहूण ब्रह्माण्ड रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीँ एसो पञ्च नमुक्कारो शिखा रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीँ सव्व-पावप्पणासणो आसन रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीँ मङ्गलाणंच सव्वेसिं पढम हवइ मङ्गलं ॥ ३५ ॥

इस मन्त्रकी सिद्धि प्राप्त करने बाद इक्कीस बार जाप करनेसे कार्य सिद्ध हो जाता है। इसका विशेष स्पष्टीकरण गुरुगमसे जानना चाहिये।

॥ पथिक भयहर मन्त्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताण नाभौ
ॐ नमो सिद्धाण हृदये,
ॐ नमो आयरियाण कण्ठ,
ॐ नमो उवज्झायाण मुखे,
ॐ नमो लोए सव्व साहूण मस्तके,

सर्वांगेषु अम्ह रक्ष रक्ष हिलि हिलि मातङ्गिनी स्वाहा ॥ रक्ष रक्ष ॐ नमो अरिहन्ताण आदि, ॐ नमो मोहिणी मोहिणी मोहय मोहय स्वाहा ॥ ३६ ॥

इस मन्त्र को साध्य करे और रास्त चलत समय विकट पन्थमें या निजगृहमे अथवा अन्यत्र चोरादि उपद्रव उत्पन्न हुवा हो तत् समय जाप्य करनेसे उपद्रव शान्त हो जाता है, और भय मुक्त हो जाता है। इसमें शक्ति तो इतनी है कि चोरादि का स्थम्भन हो जाता है, किन्तु ध्याता पुरुषका पराक्रम हो तब इतनी सिद्धि तक पहुंच सकते हैं। सम्भव है श्री जम्बू स्वामीने इसी मन्त्रका उपयोग किया हो। ज्ञानी गम्य।

॥ मोहन मन्त्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताण, अरे अरिणि मोहिणि, अमुक मोहय मोहय स्वाहा ॥ ३७ ॥

इस मन्त्रको साध्य करते समय यदि क्रिया करके अमुकके नाम सहित जाप करे, और प्रत्येक मन्त्र सफेद पुष्प हाथमें लेकर बोलता जाय और सामनेके आलम्बन पर चढाता जाय तो मोहिनि मन्त्र सिद्ध होता है। यदि क्रिया गुरुगमसे जानना चाहिये।

॥ दुष्ट स्थम्भन मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ अ सि आ उ सा सर्व दुष्टान् स्थम्भय स्थम्भय, मोहय मोहय, अधय अधय मुकय मुकय कुरु कुरु ह्रीँ दुष्टान् ठ. ठ ठ॰ ॥ ३८॥

साध्य करते समय प्रात काल मध्यान्ह, और सन्ध्या समय जाप्य करना चाहिये, पूर्व दिशामें मुख रख कर बैठना, और उत्तर क्रियाम ग्यारह सौ जाप्य करनेसे सिद्धि होती है, इसकी साधनामें "दलदारम्यामुमुवे" आदि क्रियाय करनी चाहिये सो गुरुगमसे ज्ञात करना।

॥ व्यन्तर पराजय मन्त्र ॥

नम्बर ३८ वाला मत्र जो उपर बता चुके हैं, इसीके प्रभाव से व्यन्तरका उपद्रव किसी मकान महल या मनुष्य स्त्री आदिमें हो तो केवल ग्यारह सौ जाप विधी सहित करनेसे उपद्रव मिट जाता है। इसकी साधनामें इशान कोणमें मुख रख कर

बैठे और आठ रात्रि तक अर्द्ध रात्रिके समय साधना करे तो व्यन्तरादिका भय नष्ट हो जाता है।

॥ जीवरक्षा मन्त्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताण ॐ नमो सिद्धाण ॐ नमो आयरियाण, ॐ नमो उवज्झायाण, ॐ नमो लोए सव्व-साहूण, झुलु झुलु कुलु कुलु चुलु चुलु मुलु मुलु स्वाहा ॥ ४० ॥

जीव रक्षा व बन्दीवानको मुक्त करानेके हेतु इस मन्त्रको साध्य करना चाहिये। साध्य करते समय पट्ट या थाली तांबेकी या सप्त धातुकी लेकर अष्टगन्धसे मन्त्रको लिखे और सवा लक्ष जाप करने बाद सिद्धि क्रियामें बलिकर्म अर्चनादि विधान बराबर करे तो देव सहायक होते हैं, और जीव रक्षाके समय अमुक संख्यामें जाप करने पर विजय होता है।

॥ सम्पत्ति प्रदान मन्त्र ॥

ॐ ह्री श्रीं क्लीं अ सि आ उ सा चुलु चुलु हुलु हुलु कुलु कुलु मुलु मुलु इच्छियंमे कुरु कुरु स्वाहा ॥ ४१ ॥

इस मन्त्रका चौबीस हजार जाप करना चाहिये। विधि सहित जाप हो जाने बाद उत्तर क्रिया करना और उत्तर क्रिया के बादमें एक माला नित्य फेरना, सर्व प्रकारकी सम्पत्तिका लाभ होगा।

॥ सरस्वती मन्त्र ॥

ॐ अ सि आ उ सा नमोर्हं वाचिनी, सत्य-वाचिनी वाग्वादिनी वद वद मम वक्र व्यक्त वाचया ह्रीँ सत्यबुहि सत्यबुहि सत्यवद सत्यवद अस्खलितप्रचार त देव मनुजासुरसहसी ह्रीँ अर्हं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा ॥ ४२ ॥

यह मन्त्र सरस्वती देवीकी आराधनाका है। इस मन्त्र द्वारा "बप्प भट्ट सूरजी"ने सरस्वतीको प्रसन्न किया था। इस मन्त्रका एक लाख जाप्य करनेसे सिद्ध होता है।

॥ शांतिदाता मन्त्र ॥

ॐ अर्हं अ सि आ उ सा नमः ॥ ४३ ॥

इस मन्त्रका नित्य स्मरण करनेसे शान्ति होती है, गृह कलह आदिका नाश होता है और सम्पत्ति आती है।

॥ मंगल मन्त्र ॥

अ सि. आ. उ. सा नमः ॥ ४४ ॥

यह मन्त्र तुष्टि पुष्टि दाता है, नित्य स्मरण करनेसे सुखकी प्राप्ती होती है।

॥ वस्तु विक्रय मन्त्र ॥

नट्ठट्ठमयट्ठाणे पणट्ठ कमट्ठ नट्ठ ममारे,
परमट्ठनिट्ठियट्ठे अट्ठगुणाधीसरवंदे ॥ ४५ ॥

इस मन्त्रकी साधना स्मशान स्थानमें कृष्ण पक्षकी चतुर्दशी के दिन करे। सन्ध्या कालके बाद प्रहरोद्ध रात्रिके समय आरम्भ करे। धूप दीप जयणा सहित रक्खे, गुग्गुलादिका होम जयणा सहित करे प्रति दिन कर सिद्धि प्राप्त करे। बाद [illegible] वस्तुको इक्कीस जापसे मंत्रित कर [illegible]

॥ [illegible]

ॐ अर्हते उत्पत [illegible]
स्वामिनी, ॐ धम्मेह [illegible]
अमुकस्य वायणा सेउ [illegible]

इस मन्त्रको चन्दनादि द्रव्यसे लिखनेके हेतु सामग्री एकत्रित कर पाट ऊपर रखना और धूप दीप जयणा सहित रख कर १०८ बार नवकार मन्त्रका ध्यान करने बाद मंत्र लिखना, बादमें पट्टकी पूजन अर्चन सुगन्धी पुष्पादिसे करके मन्त्र सिद्ध करना, और भय उपस्थित समय अमुक जाप किया जाय तो भय नष्ट हो जाता है।

॥ तस्कर स्थम्भन मन्त्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताण धणु धणु महा धणु महाधणु स्वाहा ॥ ४७ ॥

इस मन्त्रका ध्यान स्व ललाट विषे ध्यान लगा कर करे तो चोर-तस्कर स्थम्भन हो जाते हैं और यदि क्रिया करके मन्त्र लिखता जाय और बांये हाथसे मिटा कर मुष्टि बन्ध करता जाय इस तरह अमुक संख्यामें लिखने बाद मुष्टि बन्ध कर जाप करे—जाप पूर्ण होते ही मुष्टि खोल दिशामें फकने जैसा हाथ लम्बा करे तो चोरादि भय नहीं होता और चोर दृष्टिगत भी नहीं होते।

॥ शुभाशुभ दर्शाय मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ अर्हं नमः क्ष्वीँ स्वाहा ॥ ४८ ॥

इस मन्त्रका जाप करनेसे पहले निजके हाथोंको चन्दनसे

लिप्त कर लेवे बादमें १०८ जाप कर मौनपने भूमिशैय्या पर सो जावे तो स्वप्नमें शुभाशुभका भास होता है।

॥ प्रश्नोत्तर विजय मन्त्र ॥

ॐ नमो भगवइ सुय देवयाए सव्वसुय मायाए वारसगपवयण जणणीए सरस्सइये सच्चवायणि सुववउ अवतर अवतर दवी मम सरीर पविस पुच्छ तस्स पविस्स सव्वजणमय हरिए अरिहत सिरिए स्वाहा ॥ ४६ ॥

इस मन्त्रको साध्य करने बाद प्रश्नोत्तरका कार्य हो तब या किसी मुकद्दमेमें समय सवाल जवाब करनेसे पहले अमुक जाप इस मन्त्रके करनेसे विजय प्राप्त होगा, और हर्ष उत्पन्न होगा।

॥ सर्वरक्षा मन्त्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताण ॐ नमो सिद्धाण ॐ नमो आयरियाण, ॐ नमो उवज्झायाण, ॐ नमो लोएसव्व साहूण, एसो पंच नमुकारो, सव्वपावप्पणासणो, मङ्गलाण च सव्वेसिं, पढम हवइ मंगल, ॐ ह्रीँ हुँ फट् स्वाहा ॥ ५० ॥

इस मन्त्रका स्मरण प्रत्येक कार्यमें सुखदाई है। नित्यप्रति खूब ध्यान करना चाहिये। सर्वथा आनन्ददायक यह महा मन्त्र है।

॥ द्रव्य प्राप्ति मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ अरिहन्ताण सिद्धाण, सूरीण आयरियाण, उव्वज्झायाण, साहूण मम ऋद्धि वृद्धि समिहित कुरु कुरु स्वाहा ॥ ५१ ॥

इस मन्त्रको नित्यप्रति प्रातःकाल, मध्यान्ह और सायंकाल को प्रत्येक समय बत्तीस बार स्मरण करे तो सर्व प्रकारकी सिद्धि और धन लाभ होता है, कल्याणकारी मन्त्र है।

॥ ग्राम प्रवेश मन्त्र ॥

ॐ नमो अरिहन्ताण, नमो भगवइये चन्दाइये महानिज्ञाए सत्तइ्ढाए गिरे गिरे हुलु हुलु चुलु चुलु मयूरवाहिनिए स्वाहा ॥ ५२ ॥

इस मन्त्रका जाप्य पोस वदि दशमीके दिन उपवास करके करना चाहिये, कमस कम एक सौ बार तो अवश्य करे और उत्तर क्रिया कर सिद्ध कर लेवे, तत्पश्चात् ग्राम प्रवेश समयमें सात बार जाप कर जिस तरफका स्वर चलता हो

पहले उठा कर ग्राम प्रवेश करे तो लाभ प्राप्त होता है। साधु मुनिराज स्मरण कर तो अन्नादिका लाभ होता है और सत्कार पाते हैं।

॥ शुभाशुभं जानाति मंत्र ॥

ॐ नमो अरिह ॐ भगवउ बाहुबलीस्सय इह समणस्स अमले विमले निम्मल नाण पयासिणि ॐ नमो सव्व भासइ अरिहा सव्व भासइ केवली एएण मद्य वयणेण सव्व होउ मे स्वाहा ॥ ५३ ॥

इस मन्त्रका ध्यान कायोत्सर्गमे खड़े हुवे करे और ध्यान पूर्ण कर भूमि सथारे सो जावे तो स्वप्नमे शुभाशुभका भास होता है।

॥ विवादे विजय मन्त्र ॥

ॐ हसः ॐ ह्रीँ अ हे ऐँ श्रीँ अ सि आ उ सा नमः ॥ ५४ ॥

इस मन्त्रको इकीस बार अवाच्य स्मरण कर विवाद शुरू करे तो विजय प्राप्त होगा।

॥ उपवासफल मन्त्र ॥

ॐ नमो ॐ अर्हे अ सि आ उ सा णमो अरिहन्ताण नमः ॥ ५५ ॥

इस मन्त्रको १०८ बार स्मरण करनेसे उपवास जितना फल प्राप्त होता है।

॥ अग्निक्षय मन्त्र ॥

ऊपर बताये हुए मन्त्र नम्बर "५६"को सिद्धि करनेके बाद २१ दफा मन्त्र द्वारा जल मंत्रित कर और अग्नि उपद्रव समयमें तीन अञ्जली भरकर अथवा अन्य प्रकारसे अग्नि वेष्टित जल धार देवे तो अग्नि उपद्रव शान्त हो जाता है।

॥ सर्पभयहर मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विजये अर्हं नमः ॥ ५७ ॥

इस मन्त्रको साध्य कर तब नित्यप्रति सुबह दोपहरको और सायंकालको स्मरण करे और प्रत्येक दीपोत्सवीके दिन १०८ जाप्य करे तो यावज्जीव सर्प भय नहीं होता है।

॥ लक्ष्मी प्राप्ति मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ हँ णमो अरिहन्ताण ह्रौं नमः ॥ ५८ ॥

इस मन्त्रका नित्यप्रति १०८ जाप करनेसे लक्ष्मी प्राप्त होती है। सुख मिलता है। और द्रव्य आता है।

॥ कार्यसिद्धि मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्लीं ब्लूँ अर्हं नमः ॥ ५९ ॥

इस मन्त्रसे आपसे सर्व कार्यकी सिद्धि होती है, साध्य करते समय इक्कीस हजार जाप करना चाहिये।

॥ शत्रुभयहर मन्त्र ॥

ॐ ह्रीं श्री अमुक साधय साधय अ सि आ उ सा नमः ॥ ६० ॥

इस मन्त्रकी इक्कीस दिन तक प्रातःकाल में माला फेरे, यावत् कार्य हो तब अमुक जाप करे तो शत्रुका भय नष्ट होता है और आपत्ति दुःखादि क्षय होते हैं।

॥ रोगक्षय मन्त्र ॥

ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताण

ॐ नमो खेलोसहिपत्ताण

ॐ नमो जल्लोसहिपत्ताण

ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताणं स्वाहा ॥ ६१ ॥

इस मन्त्रके जाप्यसे रोग-पीडा शान्त होंगे नित्य एक माला फेरनेसे व्याधि कम होती है।

॥ व्रणहर मन्त्र ॥

ॐ णमो जिणाण जावयाण पुमोणि अ एएणि सव्वा वायेण वणमापच्च उमागुप उमाफुट् ॐ ॐ ठः ठः स्वाहा ॥ ६२ ॥

इस मन्त्रसे गाय मन्त्रित कर व्रण-जिनको वण भी कहते हैं बाल्कोंके शरीर पर हो जाते हैं, उन पर अथवा शीतलाके वण पर लगावे तो व्रण मिट जाता है।

॥ सूर्य मगल पीडा मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाण ॥ ६३ ॥

सूर्य, मङ्गल दोनों ग्रह शान्तिके हेतु एक हजार जाप नित्य प्रति जहां तक ग्रह पीडा रहे किया करे तो सुख प्राप्त होता है।

॥ चन्द्र शुक्र पीडा मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ नमो अरिहन्ताण ॥ ६४ ॥

चन्द्र शुक्र दोनोंकी दृष्टि पीडाकारी हो तब एक हजार जाप नित्यप्रति करनेसे सुख प्राप्त होता है।

बुध पीडा मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाण ॥ ६५ ॥

॥ कार्यसिद्धि मंत्र ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्ली क्लीँ ब्लूँ अर्हं नमः ॥ ५९ ॥

इस मन्त्रके जापसे सर्व कार्यकी सिद्धि होती है, साध्य करते समय इक्कीस हजार जाप करना चाहिये।

॥ शत्रु भयहर मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ अमुक साधय साधय अ सि आ उ सा नमः ॥ ६० ॥

इस मन्त्रकी इक्कीस दिन तक प्रातःकाल मे माला फेर, बादमे कार्य हो तब अमुक जाप करे तो शत्रुका भय नष्ट होता है और आपत्ति क्लेशादि क्षय होते हैं।

॥ रोगक्षय मन्त्र ॥

ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताण
ॐ नमो खेलोसहिपत्ताण
ॐ नमो जलोसहिपत्ताण
ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताण स्वाहा ॥ ६१ ॥

इस मन्त्रके जाप्यसे रोग-पीडा शान्त होगे नित्य एक माला फेरनेसे व्याधि कम होती है।

॥ व्रणहर मन्त्र ॥

ॐ णमो जिणाण जावयाण पुर्माणि अ एएणि सव्वा वायेण वणमापच्च उमाघुप उमाफुट् ॐ ॐ ठः ठः स्वाहा ॥ ६२ ॥

इस मन्त्रसे राख मन्त्रित कर व्रण-जिनको वण भी कहते हैं बालकके शरीर पर हो जाते हैं, उन पर अथवा शीतलाके वण पर लगावे तो व्रण मिट जाता है।

॥ सूर्य मगल पीडा मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाण ॥ ६३ ॥

सूर्य, मङ्गल दोनों ग्रह शान्तिके हेतु एक हजार जाप नित्य प्रति जहां तक ग्रह पीडा रहे किया करें तो सुख प्राप्त होता है।

॥ चन्द्र शुक्र पीडा मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ नमो अरिहन्ताण ॥ ६४ ॥

चन्द्र शुक्र दोनोंकी दृष्टि पीडाकारी हो तब एक हजार जाप नित्यप्रति करनेसे सुख प्राप्त होता है।

बुध पीडा मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाण ॥ ६५ ॥

बुधकी दशा हानिकारक हो तब प्रसन्न करने के लिये इस मन्त्रका जाप एक हजार नित्यप्रति करना चाहिये ।

॥ गुरु पीडा मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ नमो आयरियाण ॥ ६६ ॥

गुरुकी दृष्टि हानिकारक हो तब एक हजार जाप नित्य करना चाहिये ।

॥ शनि राहू केतु पीडा मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्वसाहूण ॥ ६७ ॥

इस मन्त्रका नित्य एक सहस्र जाप करनेसे शनिश्चर राहु केतुकी दृष्टि हानिकर हो तो मिट जाती है और सुख मिलता है ।

———

प्रणवाक्षर ध्यान

—*—

प्रणव अक्षर पहेली पभणीजे। प्रणव अक्षर सर्व सिद्धि दायक है। इसका धयान करते शास्त्रमें कहा है कि हृदय कमलमें निवास करनेवाला शब्द जो ब्रह्मके कारण रूप स्वर व्यञ्जन सहित परमेष्टि पदका वाचक है और मस्तकमें रही हुई चन्द्रकलासे झरते हुए अमृत रससे भींजे हुए महामन्त्र प्रणव याने॥ ॐ॥ का कुम्भकसे चिन्तवन करना स्तम्भन करनेमें पीला, वशीकरण करनेमें लाल, क्षोभ करनेमें परवालेकी कान्ति जैसा, विद्वेषमें काला और कर्मका घात करनेमें चन्द्रकी कान्ति जैसा ॐकारका ध्यान करना चाहिये। तीन लोकको पवित्र करनेवाला पञ्च परमेष्टि नमस्कार मन्त्रको निरन्तर चिन्तवन करना।

एष पञ्च नमस्कार, सर्व पाप प्रणाशन।
मङ्गलानाच सर्वेषां, प्रथम जयति मङ्गलम्॥

पञ्च परमेष्टिको नमस्कार करनेवालेके सर्वपाप क्षय हो जाते हैं, क्योंकि सर्वमगलमें यह पहला मगल है। अर्थात् महामन्त्र है और यह मत्रपद ॐकार दर्शक है अत इनका

बुधकी दशा हानिकारक हो तब प्रसन्न करने के लिये इस मन्त्रका जाप एक हजार नित्यप्रति करना चाहिये।

॥ गुरु पीडा मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ नमो आयरियाण ॥ ६६ ॥

गुरुकी दृष्टि हानिकारक हो तब एक हजार जाप नित्य करना चाहिये।

॥ शनि राहू केतु पीडा मन्त्र ॥

ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्वसाहूण ॥ ६७ ॥

इस मन्त्रका नित्य एक सहस्र जाप करनेसे शनिश्चर राहु केतुकी दृष्टि हानिकर हो तो मिट जाती है और सुख मिलता है।

प्रणवाक्षर ध्यान

प्रणव अक्षर पहेली पभणीजे। प्रणव अक्षर सर्व सिद्धि दायक है। इसका ध्यान करते शास्त्रमें कहा है कि हृदय कमलमें निवास करनेवाला शब्द जो ब्रह्मके कारण रूप स्वर व्यञ्जन सहित परमेष्ठि पदका वाचक है और मस्तकमें रही हुई चन्द्रकलासे भरते हुए अमृत रससे भींजे हुए महामन्त्र प्रणव याने॥ ॐ॥ का कुम्भकसे चिन्तवन करना स्तम्भन करनेमें पीला, वशीकरण करनेमें लाल, क्षोभ करनेमें परवालेकी कान्ति जैसा, विद्वेषमें काला और कर्मका घात करनेमें चन्द्रकी कान्ति जैसा ॐकारका ध्यान करना चाहिये। तीन लोकको पवित्र करनेवाला पञ्च परमेष्ठि नमस्कार मन्त्रको निरन्तर चिन्तवन करना।

एष पञ्च नमस्कार, सर्व पाप प्रणाशन।
मङ्गलानाच सर्वेषां, प्रथम जपति मङ्गलम्॥

पञ्च परमेष्टिको नमस्कार करनेवालेके सर्वपाप क्षय हो जाते हैं, क्योंकि सर्वमगलमें यह पहला मगल है। अर्थात् महामन्त्र है और यह मन्त्रपद ॐकार दर्शक है अत इनका जो

ध्यान करता है, उस मनवांछित फलकी प्राप्ति होगी, इसलिये ॐकार शब्दसूचक परमेष्टिको नमस्कार करना कर्तव्य है।

नाभिकमलमें स्थित "अ" आकार ध्यावे, (सि) सिवर्ण मस्तक कमलमे स्थित ध्यावे, (आ) आकार मुख कमलमें स्थित कर ध्यावे, (उ) उकार हृदय कमलमे स्थित ध्यावे, और (सा) साकार कण्ठ पिञ्जरम स्थितकर ध्याव तो यह जाप सर्व कल्याण के करनेवाला है। ऊपर कह अनुसार अ० सि० आ० उ० सा० यह पाचों बीजाक्षर हैं और इन पाचोंका ॐकार बनता है। जो इनका नित्य ध्यान करत हैं उनका कल्याण होगा। कहा है कि—

ॐकार बिन्दु सयुक्त,
नित्य ध्यायन्ति योगिन।
कामद मोक्षद चैव,
ॐकाराय नमोनमः॥

इसकी महिमा अगाध है इसका वर्णन करनेके लिये मैं समर्थ नहीं हू। जिज्ञासुओंको चाहिये कि ज्ञानीयोंकी सेवा कर प्राप्त करे।

मोती की माला

परम पूज्य मुनि महाराज श्री कपूरविजयजी की अनमोल लेखनी द्वारा
गुजराती में रचित "छूटा परायला मोती" विभाग २ के
कुछ अंश का हिन्दी अनुवाद।

—०*०—

(१) दया बिना कोई जीवन सच्चा जीवन नहीं परन्तु जीते हुए भी मरण समान है।

(२) प्राप्त हुई शक्तियों का सदुपयोग हो तभी शुभ भावना पूर्ण रूप से फलवती होती है।

(३) जिस मनुष्य की आत्मशक्ति जागृत है वह दुनिया के अच्छा या बुरा कहने की परवाह न कर अपनी आत्मा को उन्नत बनाता है, दूसरों को भी उपदेश द्वारा उन्नत बनाने की चेष्टा करता है।

(४) बाल्यावस्था में माता का मुख देखने में, युवावस्था में पत्नी का मुख देखने में तथा वृद्धावस्था

पुत्र पौत्रादिक का मुख देखने में अज्ञानी मनुष्य जीवन के अमूल्य समय को खो देता है। आत्म-स्वरूप देखने का उसे अवकाश ही नहीं मिलता। पूर्व भवों में सञ्चित पुण्यराशि, मौज, शौक, एशो-आराम में उड़ा कर, मनुष्य-जन्म खो कर चौरासी लाख जीवायोनी में भटकता रहता है।

(५) मनुष्य-जीवन ही सब में उत्तम जीवन है। इसे पाने के लिये देवता भी लालायित रहते हैं। व्रत, पच्चक्खाण, नियमादि हर प्रकार की धर्म-साधना का यही एकमात्र साधन है। ऐसे मनुष्य-जीवन को गवा देना तो उस तरह है जैसे किसी की आजन्म उपार्जित धनराशि चोर-डाकू उठा ले जाय और वह उसे बचाने का कोई उद्योग ही न करे। इसीलिये मनुष्य-जीवन को सार्थक कर लेना ही बुद्धिमानी है। आजकल के नवयुवक सामायिक प्रतिक्रमण, व्रत, उपवास, पच्चक्खाण आदि को रूढिवाद बता कर इनसे विमुख हो रहे हैं। आचार्य, उपाध्याय, साधु आदि की अवमानना होती है। यह बात सच है कि साधु

पहले से क्रिया में शिथिल हो गये हैं और यही सबब है कि आज जैन समाज में इतने भेद और प्रभेद हो रहे हैं। काल के प्रभाव से इन भेदों का मिटना सहज साध्य नहीं है। फिर भी मान्यता में भेद रहते हुये भी अगर एक दूसरे से मैत्री भाव रक्खें तो आज जैन समाज की यहाँ कुछ उन्नति हो सकती है। मनुष्यता का उच्च आदर्श तैयार हो सकता है।

(६) उन्माद, साहस आशा और आनन्द ये ऐसे साधन हैं कि मुर्दे में भी जीवन डाल देते हैं।

(७) उत्कृष्ट ग्रन्थों के पठन पाठन, और मनन से मनुष्य चरित्र उन्नत होता है, दुःख और मोह का अवसान होता है, शङ्काओं का समाधान होता है, आशा, साहस और श्रद्धा की जागृति होती है और मनुष्य अपने विचार और जीवन को उच्च बनाता है।

(८) संसार में जो भी महापुरुष होते हैं, वे अपनी नामवरी के लिये नहीं परन्तु निस्वार्थ भाव से प्रेरित होकर जगत् का कल्याण करते हैं। स्वयं सिद्धान्तों

का अध्ययन करते है, औरों के समझाने की कोशिश करते है। जो मनुष्य उनके उपदेशो का फायदा उठाते है वो अपने कर्मों का क्षय करके सिद्धिलाभ करते हैं और जो मनुष्य द्वेष बुद्धि से प्रेरित होकर उनकी अवमानना करते है वो अपने कर्मों के बन्धन को और भी दृढ करते है।

(९) महान पुरुषो का चरित्र अनुकरणीय है और अपनी स्थिति समझने के लिये मानसिक दर्पण है।

(१०) जल्दी या देरसे, सत्कार्य, पुरुषार्थ और सच्चरित्र विना शाश्वत सुख का मार्ग नही मिल सकता।

(११) सत्य ज्ञान, सत्य श्रद्धा को उत्पन्न करता है और सत्य श्रद्धा सत्य कार्य करने की ओर खींचती है।

(१२) पुरुषार्थ बिना कोई भी महत् कार्य नही हो सकता।

(१३) विनय और विवेक सहित देश काल अनु-

मार इहलोक तथा परलोक की इच्छा विना सत्पात्र को जो दान दिया जाता है वह अति उत्तम है।

(१४) गम्भीर और महत् काम बहुत ही विवेक, विचार और धैर्यता से करना चाहिये और उसके फल के लिये अधीर नहीं होना चाहिये क्योंकि धीरज का फल मीठा है।

(१५) कवि प्रेम को अन्धा मानते हैं परन्तु स्वार्थ तो उससे भी ज्यादा अन्धा है।

(१६) चित्त को हरण करने वाली सुन्दर स्त्री, अपने अनुकूल सगे सम्बन्धी विनयशील भाई, सभ्यता पूर्वक उच्चार करनेवाले गुमास्ते, हाथीओंका समूह, चञ्चल और चपल घोडे वगैरह अपने ताबे मे हो तो भी जिस समय कालचक्र शिर पर आता है उस समय कोई नहीं बचा सकता। न उसमें से कोई साथ जाता है और सब को यहा तक की अपना शरीर भी छोड करके कहीं दूसरा ठिकाना करना पडता है, इसलिये आत्मार्थी (आत्मज्ञानी) मनुष्य को जहाँ तक बन सके थोड़ा समय [illegible]में लगाना चाहिये।

(१७) मीठे वचन बोलने का अभ्यास डालना जीवन को सरल बनाना है।

(१८) सब सांसारिक उपाधि से विमुक्त हुआ मन जो आत्म जागृति का अनुभव रखता है या उसके धारण करने वाले ही जानते हैं।

(१९) नवरस में शान्तरस सब से श्रेष्ठ है और सब रसों के साथ जिस समय यह होता है उस समय आत्मा जो उन्नत दशा भोगता है वह अवर्णनीय है।

(२०) स्वर्ग का सुख परोक्ष है और मोक्ष का सुख तो उससे भी परोक्ष है परन्तु प्रशम सुख तो प्रत्यक्ष है और उसके प्राप्त करने में कोई भी व्यय नहीं है इसको प्राप्त करने का साधन शान्तरस है।

(२१) बन्धन का कारण मिलने से आत्मा को कर्म का बन्धन होता है और मोक्ष कारण मिलने से मोक्ष मिलता है।

(२२) परिणाम विचार किये बिना कोई काम करना नहीं चाहिये।

(२३) अच्छे मनुष्यों की सङ्गति करने से हरेक का आचार विचार सुधर जाता है।

(२४) गुण और गुणीजन से प्रीति करने से, उनकी सेवा और सन्मान करने से उनके आशीर्वाद से उनके गुण अपने को प्राप्त होते हैं।

(२५) किसी को कष्ट के समय मदद कर देना अमूल्य है।

(२६) जो काम हो चुका उसके लिये चिन्ता करना निरर्थक समय को खोना है।

(२७) निरोग शरीरी शांतचित्त और सन्तोषी मनुष्य ही सुखी जीवन बीताते हैं।

(२८) द्रव्य, बल और बुद्धि से मनुष्य असाध्य काम भी साध्य कर देता है।

(२९) जब तक मनुष्य को जिस वस्तु की जरूरत नहीं है तब तक उस वस्तु की कीमत वो नहीं जानता।

(३०) जरूरत पड़ने पर छोटी से छोटी चीज भी महत्वपूर्ण मालूम होती है।

(३१) धारावला में कुशल और चतुर मनुष्य से पण्डित, बुद्धिमान मनुष्य भी ठगा जाता है।

(३२) नीति को जानने वाले निर्लोभी मन्त्री (मुनीम, अधिकारी) मर्यादा का उल्लंघन नहीं करते।

(३३) चाहे जैसा बलवान, समृद्धिशाली, चतुर, या बुद्धिमान मनुष्य हो जिस वक्त समय पलटा खाता है उस वक्त वही मनुष्य गरीब रंक जैसा बन जाता है। कर्म की विचित्रता कोई पार नहीं पा सकता।

(३४) काम विषय का चिन्तन सर्वनाश का मूल है और ईश्वर का चिन्तन सर्व दुःखों से छूटने का मूल मन्त्र है।

(३५) किसी मनुष्य में अगर थोड़ा दोष भी हो तो ऐसा विचार मत करो, कि वो मूर्ख है क्योंकि सर्व दोष रहित तो अरिहन्त देव ही होते हैं।

(३६) किसी का दोष देखते हुये भी उसका अप-
ान करके या क्रोध करके उसके दोष निकालने की
ेष्टा मत करो। मीठे और प्रेम पूर्वक कहे हुये वचन ही
ोष निकाल सकेंगे।

(३७) जो मनुष्य राग और द्वेष के वश होकर,
पने दोष का निर्णय नहीं कर सकते उनको दूसरे का
ोष देख करके शिक्षा देने का अधिकार नहीं है।

(३८) बन सके जहाँ तक किसी की चीज मांगे
िना काम चलाओ।

(३९) सगे सम्बन्धी, या कोई स्वधर्मी की बात
प्रेम से सुनो और बन सके तो उसको सहायता करो
या सलाह दो।

(४०) किसी की मदद करके उसके लिये झूलो
नहीं न उसको किसी के सामने कहो। उसका तो
उपकार समझना चाहिये जिससे कि सेवा का लाभ
मिला।

(४१) किसी भी दुःखी की मदद करने की

हो तो अति गुप्त से करो नन सके तो उसको भी खबर मत होने दो।

(४२) किसी की मदद करके भूल जाना बुद्धिमान मनुष्यों का काम है।

(४३) किसी भी आदमी के पास काम के प्रसङ्ग मे जाना हो तो काम होने से जल्दी उठ जाना चाहिये। जिस से कि अपना और उसका समय वृथा नष्ट नहीं हो।

(४४) दूसरा आदमी बात करने आया हुआ हो तो अपनी बात जल्दी पूरी करनी चाहिये।

(४५) ऐसा होता तो ऐसा करते यह विचारना मूर्खता है।

(४६) जिसके बाहु मे बल हैं और छाती में हिम्मत है वो मनुष्य सीधा काम की तरफ दौडता है उस सम्बन्धी चर्चा में नहीं उतरता।

(४७) जब तक गम्भीर आपत्ति शिर पर नहीं आती तब तक वो बहुत भयङ्कर मालूम पड़ती है,

परन्तु जब वो सिर पर आती है तब उसका आघात मनुष्य सहन कर लेता है और धीरे धीरे उस आपत्ति से निकल जाता है, फिर उसको आपत्ति नहीं समझ के सामान्य स्थिति मानता है।

(४८) मनुष्य को उसका अदृष्ट कहाँ से कहाँ घसीट ले जाता है यह वो स्वय भी नहीं समझ सकता।

(४९) मनुष्य की बुद्धि और भाग्य को विरला ही समझ सकते हैं। अर्थात् सब नहीं समझ सकते।

(५०) गम्भीर दुःख के समय मृत्यु को पसन्द करके दुःख का अन्त आना सहज है परन्तु जीवन रख करके ध्येय की सिद्धि में ही सच्ची कुशलता है।

(५१) जो मनुष्य अपने मन में वैर की भावना रखता है वो जगत में अपना वैरी उत्पन्न करता है।

(५२) जो मनुष्य अपने दिल में स्नेह बढाने का सङ्कल्प करता है वो मित्रों की सख्या बढाता है।

(५३) वस्तु एक होने पर भी उपयोग करने वाले

की अच्छी या बुरी प्रवृत्ति अनुसार अच्छा या बुरा परिणाम होता है जिस तरह अग्नि मन मिठाई और पाक बनाने के उपयोग में आती है वही अग्नि सर्व को जला करके खाक बना देती है, उसी तरह रात्रि सज्जनों को विश्राम देती है और दुर्जनों को नीच कृत्य करने का मौका मिलता है।

(५४) मनुष्य मात्र के जीवन में आशा ओत प्रोत भरी हुई है और आशा बिना की जिन्दगी भी शुष्क बन जाती है पीछे जीना या मरना समान मालूम पड़ता है।

(५५) एक मनुष्य को सुखी बनाने के अपेक्षा उसको गुणी बनाना विशेष लाभकारी है।

(५६) दृढ़-निश्चय और उन्नत प्रयत्न क्या नहीं कर सकते अर्थात् तमाम कार्य कर सकते हैं।

(५७) दुनिया में स्वार्थ अन्धा है यह एक माना हुवा सत्य है।

(५८) जितना बिगाड़ स्वार्थ करता है उतना बिगाड़ दूसरा नहीं कर सकता।

(५६) अपने थोड़े लाभ के लिये दूसर का चाहे जितना नुकसान हो तो भी मूर्ख मनुष्य उसकी परवा नहीं करता।

(६०) दुनिया जितनी गरीबी से दु खी है उस से ज्यादा प्रेम से भरे हुये मीठे वचनों के अभाव से दु:खी है।

(६१) हरेक मनुष्य का भविष्य उसी के हाथ में है।

(६२) उच्च विचार और उच्च जीवन से रहने मे बहुत लाभ मिलता है।

(६३) जो मनुष्य पुरुषार्थ किये बगैर केवल अदृष्ट के आधार पर रहता है उसका अदृष्ट उद्यम विना निष्फल चला जाता है और फिर अन्त म पछताना पड़ता है इसलिये आलस्य को छोड कर उद्यमी और मेहनती बनो, काम करने से मत घबराओ, फल की आशा मन मे निकाल दो फिर देखो अपने जीवन का जमाना कैसा होता है।

(६४) उद्यम से दारिद्र नाश होता है।

(६५) जो मनुष्य मिले हुये सयोगो का सद्-उपयोग नही करत उनको पीछे पछताना पडता है और फिर बराबर सयोग मिलना मुश्किल हो जाता है।

(६६) दुःखी का दु.ख दूर करने के लिये अपने तन मन और धन से मदद करना चाहिये।

(६७) लोकोपवाद (अपयश) मरण से भी अधिक भयङ्कर है।

(६८) महान पुरुषो का जीवन चरित्र निरन्तर पढ़ने या सुनने से जो बोध की प्राप्ति होती है, वो करोड़ो नाच रग देखने से नहीं हो सकती।

(६९) महान् पुरुषों के अलौकिक गुणो मे से अगर एक आध गुण जो अपने ग्रहण कर लेवे तो अपना जल्दी सुधारा हो जाता है और जिन्दगी सुधर जाती है।

(७०) किसी भी मनुष्य ने अपने उपर उपकार

किया हो तो मन के सामने उस के गुण की प्रशंसा करना और उपकारी का हर तरह पूजनीक-दृष्टि से देखना चाहिये।

(७१) किसी को बुरा लगे ऐसा वाक्य कदापि नहीं बोलना चाहिए।

(७२) जिस तरह मैले कपड़े को साफ करनेवाला पानी है उसी तरह अन्त करण की मलीनता को दूर करने वाला शास्त्र और सन्त समागम है।

(७३) मृत्यु रोग से ग्रसित मनुष्य को जिस तरह कोई भी औषधी नीराग नहीं कर सकती उसी तरह मूर्ख को सद् उपदेश का असर नहीं होता, सद्-उपदेश का असर हलके कर्म वाले जीवों को होता है।

(७४) जग में न तो एकान्त सुख है और न दुःख ही है।

(७५) पूर्व जन्म में किये हुये धर्म [illegible] का जो फल लक्ष्मीरूप में प्राप्त हुआ है [illegible]

न लगाकर ऐश और आराम में लगा देना कितनी मूर्खता है।

(७६) हिम्मत ही विजय है और भीरुता ही पराजय है।

(७७) मनुष्य जीवन में ऐसे अनेक संयोग आते हैं जो उनका उसी वक्त उपयोग किया जाय तो अदृष्ट भी खुल जाता है और अनेक प्रकार की सुख शान्ति मिलती है परन्तु संयोग गये बाद फिर कुछ नहीं हो सकता।

(७८) अदृष्ट अनुकूल हो और कर्तव्य की दृष्टि से मार्ग अच्छा मालूम पड़ता हो तो समय का उपयोग जल्दी कर लेना चाहिये।

(७९) गरीबी कड़वी और तिरस्कार का पात्र है परन्तु कल्याण कारक है क्योंकि बहुत से विषय जिनका विचार कभी स्वप्न में भी नहीं आता था वो सामने आते हैं और अगर तङ्गी में सहन शीलता निभा ली जाय तो हरेक मनुष्य की जिन्दगी सुधर सकती है।

(८०) जब तक वृद्धावस्था आई नहीं, उपाधियों (रोगों) से शरीर क्षीण नहीं हुआ, इन्द्रियाँ कमजोर नहीं हुई तब तक बन सके उतना धर्म कार्य करलो, वरना जब शरीर कमजोर हो जायगा और प्राण-पखेरु उडने को होगा उस वख्त पछताना रह जायगा।

(८१) हरेक मनुष्य को अपने शिर पर जोखमदारी लेने के पहले खूब सोचना चाहिये और लेने के बाद उसको पूरा करना चाहिये।

(८२) भरण पोषण करने योग्य कुटुम्ब को निराधार-स्थिति में छोडने वाला अपने कर्तव्य से चूकता है।

(८३) आफत उठा के, दुःख सहन करके अपने सुख का बलिदान दे करके भी अपने आश्रय में रहे हुये स्वजन कुटुम्ब का रक्षण और पोषण करना चाहिये।

(८४) कोई भी काम में कदाग्रह का त्याग करना चाहिये।

(८५) इस जगत मे और इस समय मे गुणी पुरुप बहुत कम हैं और गुणानुरागी तो उससे भी कम हैं।

(८६) आत्म निरीक्षण बहुत जरूरी है।

(८७) धन से बुद्धि ज्यादा उत्तम है इसलिये बुद्धि प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये।

(८८) जो जो दिन और रात, घण्टा और मिनट धर्म कार्य, सत्कार्य मे जाता है वही सफल है।

(८९) द्वेष उत्पन्न करने का कारण पर-निन्दा करना है।

(९०) दुर्जन की भी निन्दा नहीं करनी चाहिये कारण कि कदाच कोई समय मे वो फिर सुधर सकता है और मित्र भी बन सकता है।

(९१) हरेक मनुष्य के गुण की तरफ दृष्टि रखनी चाहिये।

(९२) जगत मे एक भी ऐसी वस्तु नहीं, जिससे मनुष्य किसी तरह का लाभ नहीं उठा सके।

(६३) हलके (नीच) कुल मे उत्पन्न हुआ अगर सदाचारी है तो उच्च कुल मे उत्पन्न हुये व्यभिचारी से अनेक दर्जे अच्छा है।

(६४) देशाचार का उल्लङ्घन करने से लोगों में अप्रीति होती है।

(६५) उत्तम पुरुषो की सङ्गति करने से अपना आचार तथा विचार उत्तम होता है।

(६६) समान धर्मीओ के साथ दोस्ती करने से धर्म भावना ज्यादा अच्छी रहती है।

(६७) हमेशा काम करते तथा बचन बोलते पहिले यह विचारना चाहिये कि इसका असर सामने वाले पर क्या होगा।

(६८) अमृत और जहर दोनो जीभ मे रहे हुये है।

(६९) वशीकरण मन्त्र भी जीभ में रहा हुआ है।

(१००) जिस वक्त अपने मे क्रोध आया हुआ हो उस वक्त सर्वथा मौन रहना अति उत्तम है।

(१०१) शस्त्र का घाव कई दिन बाद मिट जाता है परन्तु मर्म वचन का घाव जिन्दगी पर्यन्त मिटना मुश्किल है

(१०२) मनुष्य का चरित्र ही उसका भविष्य है।

(१०३) लक्ष्य बाधा बिगर बहौत से काम करने के बजाय एक भी काम दृढता और आग्रहपूर्वक करना उत्तम है।

(१०४) खुश मिजाजी और आनन्दी मनुष्य आरोग्य जीवन गुजारते हैं।

(१०५) खुश मिजाजी मे अद्भुत बल है उसकी जीवन शक्ति अटूट है।

(१०६) परिश्रम करने से मनुष्य मरते नहीं परन्तु काम के झन्झट से मरते हैं कारण परिश्रम तो आरोग्यता का मूल है।

(१०७) आत्म विश्वास बिगर का मनुष्य निर्बल होता है।

(१०८) कर्म की गति बहुत विचित्र है वो गरीब को धनी और धनी का गरीब बनाने में एक दिन भी नहीं लगाती।

श्री दादाजी महाराज की अष्टप्रकारी पूजा

तथा

* स्तवनावली *

अथ प्रतिष्ठा

सकलगुणगरिष्ठान् मत्तपोभिर्नरिष्ठान् ।
शमदमयमतुष्ठाँश्चारुचारित्रनिष्ठान् ॥
निखिलजगति पीठे दर्शितान्मग्रभागान् ।
मुनीपकुशलसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरीगुरो अनानतरानतर स्वाहा ॥
ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशलसूरे अत्र तिष्ठ ठ ठ स्वाहा ॥

॥ इति प्रतिष्टापन ॥

❀ अथ सन्निधिकरण ❀

ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशलसूरिगुरो अत्र मम सन्निहितो भव वषट् ॥

॥ इति सन्निधिकरणम् ॥

❀ अथ लघु अष्टप्रकारी पूजा ❀

(१) अथ जल पूजा

सुरनदीजलनिर्मलधारया ।
प्रबलदुष्कृतदावनिवारया ॥
सकलमङ्गलवाञ्छितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा ॥

(२) अथ चन्दन पूजा

मलयचंदनकेशरसारिणा ।
निखिलजाड्यरुजातपहारिणा ॥
सकलमङ्गलवाञ्छितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्री श्री श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकमलेभ्योश्चदन
जामहे स्वाहा ॥

(३) अथ पुष्प पूजा

कमलकेतकिचपकपुष्पकैः ।
परिमलाहतषट्पदवृन्दकैः ॥
सकलमङ्गलवाछितदायक ।
कुशलसूरिगुरोश्चरण यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकमलेभ्यो पुष्प
जामहे स्वाहा ॥

(४) अथ अक्षत पूजा

सरलतन्दुलकैरतिनिर्मलैः ।
प्रवरमौक्तिकपुञ्जनिभोज्ज्वलैः ॥
सकलमङ्गलवाछितदायक ।
कुशलसूरिगुरोश्चरण यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकमलेभ्यो
अक्षत यजामहे स्वाहा ॥

(५) अथ नैवेद्य पूजा

षड्विधैरशननिर्मितकप्परैः ।
प्रवरमोदकपूरअपूपकैः ॥
सकलमङ्गलवाञ्छितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकमलेभ्यो नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥

(६) अथ दीप पूजा

अतिसुदीप्तमयं सद्धदीपकै-
र्विमलज्ञाननभानगम्यितैः ॥
सकलमङ्गलवाञ्छितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकमलेभ्यो दीपं यजामहे स्वाहा ॥

(७) अथ धूप पूजा

अगरचन्दनधूपदशाङ्गजैः ।
प्रसरिताखिलदिग्गुणधूम्रकैः ॥

सकलमङ्गलवांछितदायक ।
कुशलसूरिगुरोश्चरण यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशलसूरीगुरोश्चरणकमलेभ्यो धूपं यजामहे स्वाहा ॥

(८) अथ फल पूजा

पनसमोचमदाफलकर्कटै. ।
सुसरदै. किल श्रीफलचिर्भटै ॥
सकलमङ्गलवांछितदायक ।
कुशलसूरिगुरोश्चरण यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकमलेभ्यो फल यजामहे स्वाहा ॥

(९) अथ अर्घ्य पूजा

जलसुगंधप्रसूनसुतदुलै-
श्चरुप्रदीपकधूपफलादिभि ।
सकलमङ्गलवांछितदायक
कुशलसूरिगुरोश्चरण यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥

...दाजी की अष्टप्रकारी पूजा

अथ दर्शन विधि

प्रथम दर्शन पाते ही गुरु पर नमस्कार करके तीन बार प्रदक्षिणा देना। तत्पश्चात् श्रीगुरुदेव महाराज के सामने खड़े होकर पांचों अंगों (१ सिर २ हाथ २ पांव) को नमाकर तीन बार "खमासमण" देना।

अथ क्षमाश्रमण

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसिहि-आए मत्थएण वंदामि।

(इतना कह कर खड़े होकर गुरु सन्मुख दोनों हाथ जोड़ कर "इच्छाकार सुहराइ" का पाठ इस तरह पढ़ें)

अथ इच्छाकार सुहराइ

इच्छकार सुह राइ (देवसि)* सुख तप शरीर

---

* नोट—रात्रि बारह बजे से दिन बारह बजे तक 'राइय' का पाठ कहना तथा दिन बारह बजे से रात्रि बारह बजे तक 'देवसिय' का पाठ कहना। पक्खी हो तो 'पक्खीय, चोमासी हो तो चोमासिय तथा सवत्सरी हो तो 'सवच्छरीय का पाठ कहना।

निराबाध सुख संयम यात्रा निर्वहो छोजी, स्वामी शाता छेजी ।

(इतना कह कर गुरु के सामने खडे खडे ही "अब्भुट्ठिओ" का पाठ कहना ।)

अब्भुट्ठिउ

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुठिओमि अब्भि-तर राइअ (देवसिअ) खामेउ इच्छं खामेमि राइय (देवसिय)

[इतना कह कर शिर झुका के दाहिना हाथ भूमि पर रख, बाया हाथ मुख के आगे रख घुटनों के बल बैठ निम्न लिखित पाठ पढना]

ज किंचि अपत्तिय परपत्तिय भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए ज किंचि मज्झ विणयपरिहीण सुहुम वा बायर वा तुब्भे जाणह अह न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

स्तोत्र

नमाम्यहं श्रीजिनदत्त सूरिं, गुणाकरं किन्नर पूज्य-
पाद । यतीश्वरं तुष्टिकरं स्वरूपं, लावण्यगात्रं बहु सौख्य-
कारं ॥ १ ॥ भूपा नरा ये प्रणमन्ति नित्यं, तेषां मनीषां
सफली करोति । लक्ष्मीर्यशो राज्यरतिप्रभूति, विद्याधरं
श्री ललना सुखानि ॥ २ ॥ भक्ता नरा ये तव पादसेवां,
कुर्वन्ति सन्तेऽत्र लभन्त एव । न दुःख दौर्भाग्य भय न
मारी स्मरन्ति ये श्रीजिनदत्तसूरिं ॥ ३ ॥ कवि स्वबुध्या
गुरु मन्त्रिभोऽपि, नास्ते गुणान् वर्णयितुं समर्थः ।
तथापि त्वद्भक्तितो मुनीन्द्र ! करोमि किंचिद्गुण-
वर्णनं ते ॥ ४ ॥ महार्णवे भूधर मस्तकेऽपि, स्मरन्ति ये
श्रीजिनदत्तसूरिं । सुखैः महायान्ति जना स्वधाम्नि,
ततो भवन्त प्रणमामि काम ॥ ५ ॥ जैनाब्ज सनोधन
पूर्णचन्द्र, सत्सेवकं कामित कल्पवृक्ष. । युगप्रधानस्तुल-
साधुसूरिः सूरीश्वरं श्रीजिनदत्तसूरिः ॥ ६ ॥ न रोगशोका
रिपूभूतयक्षा, न च ग्रहा राक्षसवैरीगः । न पीडयाति

त्र नाम मात्रातु, तस्मन्नराणा शिवदायकस्त ॥ ७ ॥ इत्थ
ोरष्टकमुत्तम य प्रभातकाले प्रपठेत्सदैव । किं दुर्लभ
स्य जगत्रये पि, सिध्यति सर्वाणि समीहितानि ।८। इति

[२]

पद्माकल्याणविद्याकमलपरिमलस्फूर्त्तिभानुप्रकाश !
ातिस्फीत्याभिनुत्यक्रमकमलमिलन्मानवामर्त्यनाग ! प्रौढा-
ार्यावलीभिः सदतिशयकृते ध्येयज्ञेयस्वभाव ! त्राता
देराउरे श्रीजिनकुशलगुरो ! स्तूप रूप ! प्रसीद ॥ १ ॥
सघे ग्रामे पूरे वा सकलजनपदे राजवर्गे कुटुम्बे गच्छे
सघाटके वा प्रमुदितमनसा वासरे वा निशाया । यन्नाम
स्मर्यमाण भवति भयहर सर्वसम्पत्तिकारी । श्रीमान्
दाता प्रतापी जिनकुशलगुरो न त्वदन्योऽस्ति लोके ॥२॥
सर्वक्ष्मापालमालापरिषदि विबुधा. श्रेणिवेणीसभाया ।
वादव्याख्यानगोष्ठीसुललित वचनन्यासविन्यासजन्य ॥
सौभाग्य त्वत्प्रसादद्विमलशशिकलाकातिकीर्त्ते. प्रद स्यात् ।
त्रैलोक्यख्यातसूरे जिनकुशलगुरो ! वाञ्छित मे प्रदेहि ॥
३॥ सामर्थ्य सर्वशास्त्रे स्ववचनपटुता तार्किकत्व
निर्णी[illegible] समयनिपुणता

चरणौ ॥ ४ ॥ गुरुंरगास्वाद्यन्ते परमगुरु धर्मोपदिशतः । मदा कामः पीतामृतरसनराश्रैरपि गिर' ॥ श्रुतायस्य श्रेयः श्रियमपि दिशन्ति स्थिरधिया । समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ ५ ॥ निधि' सर्वश्रीणामनधिकरणौ सर्वविपदा । मृदुस्निग्धौ शीणावुपचितनखौ गूढघुटिकौ ॥ समानौ प्राचुङ्क्रमपद पदशारानिलनतौ । समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ ६ ॥ ययोरर्चा सूते धनसुख धरा धामरमणी' । शरीरारोगत्व विनय नयविद्या निपुणता ॥ गुणा नौदार्यादीनपि तनयलक्ष्मीः श्रितनृणा । समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ ७ ॥ भय कारागारामथममरपारीन्द्रफणभृन महापारावारद्विरदवनवैश्वानरभव ॥ न डाकिन्याद्युग्रग्रहगरलज यत्स्मरणत. । समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ ८ ॥ इत्थ श्रीजिनपद्मसूरि रचित दिव्याष्टक सद्गुरो ॥ पुण्य मन्त्रमय मनोज्ञ फलद पापौघविध्वमनम् । भक्त्या य. पठति प्रभात समये सर्वत्र तस्य ध्रुव ॥ वश्या भूपतयो भवन्ति सतत लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी ॥ ९ ॥ इति गुरुदेवदिव्याष्टकम् ।

ॐ ह्रीं श्री जिनकुशल सूरे एह्येहि सन्निहित. सुप्रसन्नो

भ्र मम दर्शनं देहि देहि ऋद्धिं वृद्धिं सिद्धिं कुरु २ स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं श्रीजिनकुशल सुरिभ्यो नम । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीजिनदत्त सूरिभ्यो नमः ॥

[४]

विपुलविशदकीर्तिविष्टपे वर्वर्तीति, भवति च मम-सिद्धिर्जातकार्यस्यतेषाम्। निजहृदि गुरुभक्ता भावना मादर ये, जिनकुशलगुरुणा पादपद्म श्रयन्ते ॥ १ ॥ जिनकुशलगुरूणा नाम जीवातुतुल्य, हृदयकमलमध्ये नित्यमाराधयन्ति। अभिनवधवबुध्या वश्यमायान्ति तेषा, सुरयुवतिसरूपाश्चारुरूपा मृगाक्ष्य ॥ २ ॥ नाद तृषाक्रान्तविहस्तदेहा, शुष्कास्यजिह्वोष्ठविनिर्गताशा.। श्रीमद्गुरुणा चरणाभिपन्ना, भवन्ति पान्था जलपूरिताशा ॥ ३ ॥ भूर्यापदस्तस्य सुसपद स्यु, दुर्दान्तयानिष्टोपि भवेद्विशिष्टः। कृष्ण प्रकृष्ण विलयप्रयाति, यो नामधेय हृदये दधाति ॥ ४ ॥ ये पुष्पैर्गुरुपादपद्मयुगलीं चर्चन्ति भक्ता नताः, सद्गन्धैर्हिमवालुकामृगमदासङ्गाश्रितैर्दीपनैः। स्वप्ने तान्न विलोकयन्ति विपदो दुष्टा यमा भीतय', सेवन्ते सकलाः-श्रियेऽपिसतत श्रयाति भूयासि वै ॥ ५ ॥ येद्राज्य गजवाजिराजिकलित वाञ्छन्ति सान्द्रैः सुखैः,

तूर्णं पूर्णमनोरथान् सुरसमान् भोगाश्च नानाविधान् । पाण्डित्य पविभृत्पुरोहितनिभं ये मद्गुरुं ते तदा, पीयूषामलमाधुरैः मृदुपदन्यासैः स्तुवन्त्वाददात् ॥ ६ ॥ शार्दूलोमृगधूर्तकायतिभृश सिंहश्चुरङ्गीयति, व्याल किञ्चुलकीयति द्विपवरो निर्दग्धवस्तपोयति । शत्रुश्चैव सहोदरीयति पुनः सिन्धुस्तडागीयति, नीचस्त्विष्टजनीयतीह सुगुरोः सान्निध्यतो मानुषे ॥ ७ ॥ येषानाम्नैतनस्यु जननिकटचरा दुष्टप्रेताः पिशाचाः, शाकिन्यो नैव भूताः परिभवति पुनो नैव सौदामिनी च । कोशाकृष्टैः कृपाणैरविसुतरसनादारुणैर्व्याप्तहस्ता, भीष्माकारा कराला परविभवमुखो दस्यवो नाक्रमन्ति ॥ ८ ॥ कर्णाटे मेदपाटे क्षितिधरनिकटे सङ्कचे कर्कटेऽपि, सौवीरे सिन्धुतीरे मगधजनपदे जङ्गल मध्यदशे । काश्मीरे कामरूपे प्रतिवसमनतो मालवे दक्षिणेऽपि, सौराष्ट्रे गौर्जरे श्रीजिनकुशल गुरोःसद्यशोसरसीति ॥ ६ ॥ नरीनर्ति यशः प्रोक्त, मरीमर्ति त्रिविष्टपम् । सरीमर्ति चतुर्दिक्षु, वरीवर्ति महीतले ॥ १० ॥ साय प्रभाते दिनमध्यभागे, पितामहाना पदमर्च्चवन्ति । क्षेम च सौख्य गुरुहर्षयुक्त, विद्याविलास विपुल लभन्ते ॥ ११ ॥

स्तवन

सिन्धुरा—ध्रुपद चौताला।

जय २ जगम युगप्रधान भट्टारक श्री स्थूलभद्र महिमा अनत विस्तारे हैं ॥ जय० ॥ कीन्हो कठिन चौमान, कोश्या वेश्या निवास, डिगे ना डिगाय, हारी, शेष तिहि उवारे हैं ॥ जय० २ ॥ चौरासी चौवीन नाम आपके समान आप, उपमा न पाए कवि हेरि हेरि हारे हैं ॥ जय० ॥ ३ ॥ पद्म मेरे दृगतारे, आप उपदेश द्वारे, जेते जीव, तारे तेते जगमे न तारे हैं ॥ जय० ४ ॥

प्रभाती

आजकी घडिया सफल भाई है, गुरु दरसन मैं पायारे ॥ आज रोम २ आनन्द भयो मेरो, मनमे हरख भरायारे ॥ आज० १ ॥ आशा पूरण सङ्कट चूरण, एहि निरुद्ध धराया है। नाम लेत नवनिधि सुख पावे, दरसन दुरित पुलाया है॥ आज० २ ॥ आरति चूरो वछित

पूरो, रिद्धि सिद्धि सुख दाया है। दिन दिन मुझ पर होत वधाई, आनन्द हर्ष समाया है ॥ आज० ३ ॥ दूर दशमें महिमा तेरी, सुनके हर्ष न माया है। मन वच काया एकान्त करीने, तुमसे ध्यान लगाया है ॥ आज० ४ ॥ और देव म कभी न ध्याऊं, गुरु चरणें चित्त लाया है। सेवक कर जोडी इम विनवे, हरख २ गुण गाया है ॥ आज० ५ ॥

गिरजाकी चाल

सदगुरुजी माहरा, शरणे आया की लज्जा राखज्यो ॥ स० ॥ पतित उधारण विरुद सुणीने, आयो तुमरे पास ॥ अब मन वछित पूरो मेरा, एहिज दिलकी आशजी ॥ स० १ ॥ काम क्रोध मद लोभ तजीने, तज दियो सब संसार ॥ नवपद नो एक ध्यान धरीने, पाया सद्गुण पारजी ॥ स० २ ॥ देश २ मे थंभ विराजे, परचा जग विख्यात ॥ इण कलि माहे सुरतरु सरिखा प्रगट रह्या साक्षातजी ॥ स० ३ ॥ चिन्तामणि और कामधेनु सम, मेरे तुमहीज देव ॥ आण धरु हु ताहरीजी, करू तुमारी सेवजी ॥ स० ४ ॥ मातपिता बन्धु तुम जगमे,

हितकारी गुरु राय ॥ राजागणा सट्ट जग माहे, सेवे तुम्हारा पायनी ॥ म० ५ ॥ आज प्रभु चरण पसाए, सीधा वछित काज ॥ लक्ष्मी प्रधान तुम्हारा दरसन, मोहन गुणका रायजी ॥ म० ६ ॥

देशी चाल

गुरु दरसण पायो में आज, मनमें हरख घणी ॥ आकणी ॥ रोम २ आनन्द भयो मेरे, दुःख मदूट गयो भाज ॥ रणम ध्यावे जय २ पावे, तारे जलधि जहाज ॥ मन० १ ॥ आजकी घडिया सफल भई है, समरया वछित काज ॥ रिद्ध सिद्ध सुख सम्पति दीने, महेर करी महाराज ॥ मन० २ ॥ तुम बिन देव अवर नहीं ध्याऊ, पाऊ सुख समाज ॥ सेवक आणी सदा सुख दीजे, राखो हमरी लाज ॥ मन० ३ ॥

भैरवी

सतगुरु चरण कमल पूजन की लग रही आशा मन की॥टेका॥गुरुदरबार चलो भवि जन मब भइ किरपा दरसण की ॥ १ ॥ सत० ॥ भेटो चरण चन्दन कर्पूर से तपत मिट सब तन की ॥ २ ॥ सत० ॥ बहुत बार हमने गुरुदाता

टाली विपत भवियन की ॥ ३ ॥ मत० ॥ रायो लाज दास माणक की लीनी शरण चरण की ॥ ४ ॥ मत० ॥

राग सोरठ

सद्गुरु नें पकडी बाह, नहीं तरि बह जाते ॥ स० ॥ टेर ॥ भवसागर के बीच परे रे, काम महागनि दाह, मच्छ गलागल जहा लगी रे, दु.ख जल पूर अगाह ॥ न० स० ॥ १ ॥ देव असुर नर वर बडे रे जामें वहत निहार, तन मन मेरो थरहरे रे, और न को आधार ॥ न० स० ॥ २ ॥ निर्यामक सद्गुरु मिले रे. तारक भव्य जहाज, धर्म पोत के बीच धरे रे, कहत क्षमा कल्याण ॥ न० स० ॥ ३ ॥

भैरवि—खेमटा

गुरुदेवजी का ध्यान सदा चित्त में लाइये । भव भव के सकल पातक छिन में मिटाइये ॥ गुरु १ ॥ निरुपम स्वरूप जिनका अमीरस से है भरा, निर्म्मल गुणो की देख के, आनन्द पाइये ॥ गुरु २ ॥ साहिब सुजान जिनके चरणों की शरण गही, जागी सुमत सुघरसे, परम पद को ध्याइये ॥ गुरु ३ ॥ दाता दयाल इनके,

मिवाय जगमें कौन है, जिनकी कृपा से बोध, हियेमें जगाइये ॥ गुरु० ४ ॥ गुरु भक्ति आन अपने, हृदय बीच चुन्नीदाम, सेवा मे मनको दीजे, सुजस मुखसे गाईये ॥ गुरु० ५ ॥

खंमाच—पंजाबी।

आज मेरे अभयदेव गुरु रायारे, देखत पाप पलायारे ॥ आज० १ ॥ चन्दसूरके पाट पटोधर, दरस देखि हरखायारे ॥ आज० २ ॥ कर्मोदयमो गलित कुष्ट को, आमिल तपमो हटायारे ॥ आज० ३ ॥ शासनदेवी वाक्य सुणीने, रोम २ विकसायारे ॥ आज० ४ ॥ नवअङ्ग वृत्ति रचना करीने, स्थमन तीर्थ उपायारे ॥ आज० ५ ॥ महिमा भक्ति गुरु गुण गावे, पद्मोदय हुलसायारे ॥ आज० ६ ॥

सारंग—कहरवा।

वारिजाउं गुरुराय, चरणनकी वारिजाउ ॥ श्री जिनदत्त सूरिसर सद्गुरु, सफल घडि सेवा चरण की ॥ वा० १ ॥ प्रथम मगल गुरु रायकी सेवा, अशुभ करम मन हरणकी ॥ वा० २ ॥ दारिद्र भञ्जन अरि सब गञ्जन,

पग सानिध करण की ॥ वा० ३ ॥ मोहि नहीं परवाह अनेरी, शरण गहि इन चरणनकी ॥ वा० ४ ॥ श्री जिनहर्ष चरण को दास आस पूरो सुख करण की ॥ वा० ५ ॥

सहाना — धमाल ।

श्रीजिनदत्त सूरिन्दा परम गुरु श्रीजिनदत्त सूरिन्दा ॥ परम दयाल दयाकर दीजे, दरसण परम आनन्दा ॥ परम० १ ॥ जङ्गम सुरतरु वछित दायक, सेवक जन सुखकन्दा ॥ परम० २ ॥ सद्गुरु ध्यान नाम नित समरण, दूर हरण दुखदन्दा ॥ परम० ३ ॥ जिन-पद सेवक सानिध कारी, राखिये गुरु राजेन्दा ॥ परम० ४ ॥ नेकर जोडी विनययुत विनवे, श्रीजिन हर्ष सूरिन्दा ॥ परम० ५ ॥

सहाना—धमाल ।

सद्गुरु चरण कमल चित लावे, मनवछित फल तुरत ही पावे ॥ १ ॥ वल्लभसूरि पटोधर कहिये, दत्तसूरि गुरु नाम कहावे ॥ २ ॥ चौसठ योगिनी बावन वीरहि वस किये गुरु तुमरो गुण गावे ॥ ३ ॥ मृतक गऊ जिनवर

मन्दिरते, मन्त्रसो बरके मनीव उठावे ॥ ४ ॥ महिमा भक्ति गुरु चरण कमल मे धर्मोदय मुनि यह चित चावे ॥ ५ ॥

प्रभाती

ऐसे गुरु ध्याउ मन वछित फल पाऊ । आकणी ॥ जल चदन और पुष्प मनोहर, धूप दीप ले आऊं । अक्षत और नैवेद्य मधुर रस, विविध भात फल लाऊ ॥ ऐसे० १ ॥ श्री जिनदत्त सूरिश्वर साहिब, तुम विन अवर न ध्याऊं । ताल कसाल मृदग झाझ डफ, थेई थेई ताल बजाऊ ॥ ऐसे० २ ॥ दीन दयाल दया कर दीजे, सुख सम्पति मैं चाहूं । सेवक जाणी सदा सुख दीजे, हरख २ गुण गाऊ ॥ ऐसे० ३ ॥

देशी चाल

हारे लाला श्रीजिनदत्त सूरिश्वरू, दादो ग्रह उगमता सूररे लाला ॥ भाव धरी पूजे सदा घर्मी कुकुम केलि कपूरे लाला ॥ श्री० १ ॥ जीते चौसठ जोगनी वस किया बावन वीररे ला० ॥ मन्त्रबले करी साधिया जिन पञ्च-नदी पञ्चपीररे लाला ॥ श्री० २ ॥ हिंसा टाली जीवनी

कारी जी ॥ धूप दीप नैवेद्य आरती, पूजा फल निस्तारी जी ॥ २ ॥ अल्पबुद्धि मैं गुण समुद्र तुम, कैसे करु विचारी जी ॥ शशिमण्डल जिम जल के भीतर, वाल ग्रहे कर धारी जी ॥ ३ ॥ नाम प्रताप हम उपर कीनो, कृपा आपकी भारी जी ॥ श्रीजिनचन्द्र हर्ष हृदय मे, आयो शरण तुमारी जी ॥ ४ ॥

स रग—तेताला

मन वंछित काज करो मेरे, मन वंछित० ॥ सुरनर पूजे पद तेरे, मनवंछित० ॥ मणिधारक वरदायक गुरुके, गाजे जग यश बहुतेरे ॥ मन० १ ॥ पूरण ज्योति उदय जिन शासन पाटवी वीर जिनन्दकेरे ॥ मन० २ ॥ सुर मुनि जन गुरु चरण कमलमे, यही नित ध्यान हृदय मेरे ॥ मन० ३ ॥ श्रीजिनचन्द अक्षय सुख दीजे, अनिचल आनन्द बहुतेरे ॥ मन० ४ ॥

इमन—तेताला

सदगुरु मणिधारी महाराज, श्रीजिनचन्द सूरीश्वर साहिब, दरसन दीजे राज ॥ १ ॥ मेहर करीने प्रेम धरीने,

निन जनने चित्त धार, श्रीजिनदत्त पटोधर मुनिवर, आनन्द सुख दातार ॥ २ ॥ जन दुःखभञ्जन निरुद्ध तुमारो, जाणे सहु नरनार ॥ श्रावक जन मन वञ्छित पूरण, सुरतरु ज्यों जगसार ॥ ३ ॥ वाद विवादे जग यश पावे, तारे जलधि जहाज ॥ घाट घाट भव सङ्कट टाले, समरण श्री गुरुराज ॥ ४ ॥ पुत्र पुनीता परम विनीता, रूप लक्ष्मी नार ॥ रिद्ध सिद्ध सुख सम्पत घरमें, धन भरिया भण्डार ॥ ५ ॥ आरत चूरो वञ्छित पूरो, अरधारो अरदास ॥ श्रीजिनचन्द्र अक्षयनिधि दायक, सफल करो हम आश ॥ ६ ॥

कालिंगड़ा—तेताला

सदगुरुनी में शरणे आयो, जन्म मरणको दुःख मिटायो ॥ सद० १ ॥ श्रीमणिधारी चन्द्रसूरि गुरु, तुम सम दूजो कोई न पायो ॥ सद० २ ॥ इन्द्रप्रस्थ म थम विराजे, दरशन करके मन हरखायो ॥ सद० ३ ॥ इण कलिकाले प्रगट प्रतापी, विरद देखके दिल ललचायो ॥ सद० ४ ॥ महिमा भक्ति सुनी कर जोडि, पद्मोदय गुरु के गुण गायो ॥ सद० ५ ॥

रेखता

भले निराजोजी, मणिधारी महाराज, दिल्ली मे भले निराजोजी ॥ तुमतो भले निराजोजी, मणिधारी म० ॥ ए आकणी ॥ नर नारी मिल मन्दिर आवे, पूजा आन रचावे ॥ अष्टद्रव्य पूजामें लावे, मन वछित फल पावे ॥ तुम० १ ॥ आशा पूरो सङ्कट चूरो, ये है विरुद तुमारो ॥ आधि व्याधि सन दूरे नामो, सुखसम्पत दातारो ॥ तुम० २ ॥ वाद विवाद जिन जे पामे, तारे जलधि जहाज ॥ वाट घाट भेदे पीडा भाजे, सुमरण श्री गुरु राज ॥ तुम० ३ ॥ पुत्र पुनीता परम विनीता परचा पूरण हारो ॥ रिद्ध सिद्ध सुख सम्पत दीजे, वल भरजो भडारो ॥ तुम० ४ ॥ सेवक उपर करुणा करजो, महेर नजर तुम धरजो ॥ लक्ष्मी लीला घर मे भरजो, एतो काम करजो ॥ तुम० ५ ॥

देशी ख्याल

लीजे २ अरजी मोरी मान। कीजे २ करुणा करुणानिधान ॥ दीजे मोहे सुमत ज्ञान। श्रीजिनचन्द

सूरि मणिधारी उपगारी दूजो नहीं तुम सम, मानक चाकर की विनती सुनिये धर के ध्यान ॥

होली

श्री जिनचद सुखकारी अरज सुन लीजे हमारी। ए टक। खरतरगच्छ नायक सुख दायक पर उपगारी। भट्टारक गुरु जङ्गम सुरतरु सहस किरण उतारी॥ सुगुरु मस्तक मणिधारी ॥ १ ॥ श्री जिन० ॥ निपत विदारण कष्ट निवारण सेवक जन हितकारी। चिंतामणि और कामधेनु सम वंछित फल दातारी, खलक जाने गुरु भारी ॥ २ ॥ दीनदयाल दयानिधि दाता तुम महिमा जग भारी। सोमवार पूनम दिन थारो पूजे चरण नरनारी, लिये केसर जल झारी ॥ ३ ॥ तुम सम दाता और न जग मे यह मन माहे विचारी। श्री सतयुग माणक चाकर ने लीनी शरण तिहारी, जाए चरणन पर वारी ॥ ४ ॥

श्रोटकाष्टक

एजी सतन के मुख वाणी सुनी, जिनचर्द मुनिन्द महन्त यति,। जप्प जप्प करें गुरु गुज्जर मे, प्रतिबोधत. है भविको ˆ तब ही चित चाहत च प

गुन्दर के प्रभु गच्छपति । पटई पतिसाह अजवकी छाप, बोलाए गुरु गजगत गति ॥ १ ॥ एजी गुज्जंर से गुरुराज चले, बीचमें चतुर्मास जालोर रहे । मेदिनी तट मत्र मडाण किये, गुरु नागौरे आदर मान लहे ॥ मारवाड ऋणी गुरु वन्दनकू, तरसे सरसे चित्त वेग वहे । हरष्यो सघ लाहौर आये, गुरु पतिसाह अकब्बर पास गहे ॥ २ ॥ एजी साह अकब्बर बब्बरके, गुरु सूरति देखत से हरखे । हम जोगी जिम सिद्ध साधु व्रती, सबही पट दरशन के निरखे ॥ तप जप्प दया धर्म धारणकूं, जग को उन्हीन के सरिखे। समय सुदर के प्रभु धन्य गुरु, पतिसाह अकब्बर जो परिखे ॥ ३ ॥ एजी गुरु अमृतवाणी सुनी, सुलतान पतिसाह ऐसा हुकुम किया। सब आलम माहि अमारि पलाई, बोलाई गुरु फरमाण दिया॥ जगजीव दया धर्म दाखिणते, जिन शासन मे यश भाग लिया। समयसुदर के गुणवत गुरु दग देखि हरखित होत हिया॥ ४ ॥ एम श्री जी गुरु धर्म गोठ मिले, सुलतान सलेम अरज करी। गुरु जीव दया धर्म चाहत है, चित अन्वर प्रीति प्रतीत धरी॥ कर्मचद बुलाई दियड फर-

माण, छुडाइ खभाइत की मछली। समयसुन्दर कहै सब लोक नमै, ज्यु खरतर गच्छकी ख्याति खरी ॥ ५ ॥ एजी श्री जिनदत्त चरित्र सुनी पतिसाह भरो गुरु राजियारे उमराव सबे कर जोड खडे, पभणे मुणि आपणे हाजियारे ॥ युग प्रधान गुरु, गृदिशुं धु वाजियारे। समयसुन्दर के प्रभु धन्य गुरु, पतिसाह अकब्बर गाजिया रे ॥ ६ ॥ एजी ज्ञान विना न कला सुकला, गुण देखि मेरा मन रानियेज्यु । हुमाउ के नन्दन एम अखै, मान-सिंह पटोधर कीजियेज्यु ॥ पतिसाह हजुर थयो सिंह सूरि, मडाण मन्त्रिश्वर कीजियेज्यु ॥ ७ ॥ एजी रीहड वश विभूषण है, खरतर गच्छ समुद्रशशि। प्रगट्यो जिन माणिक सूरि के पाट, प्रभाकर ज्यु प्रणमु उल्हसी ॥ मन शुद्धि अकब्बर, मानत है परतीत तिसी। जिनचन्द मुनिन्द चिर प्रतिपो, समय सुन्दर देत आशिष इसी ॥ ८ ॥

वेराग—यत्

मैं निरख्या गुरु महाराज, छतिया हर्ष भरी ॥ मैं० ॥ अमल अनन्त गुण आगरोरे, ममता रसनो

धाम ॥ परम २ परमात्मारे, वछित दायक स्वाम ॥छ० १॥ करुणा-निधि गुरुदौलतीरे, सेवक जन प्रतिपाल ॥ भवि-जन भक्ति भानसेरे, भर २ लावे थाल ॥ छ० ॥ केशर चन्दन कु कुमारे, भरिय रुचोली हाथ ॥ पदमिणी आवे मिल पतिरे, पूजे सहियर साथ ॥ छ० ३ ॥ कुशल सूरी श्वर साहिनारे, चन्दसूरीश्वर पाट ॥ बलिहारी जिन-कुशलनीरे, गावे घणु गहि घाट ॥ छ० ४ ॥ अष्ट सिद्धि नव निधि करेरे, सुख सम्पूरण सार ॥ श्रीजिनहर्ष सुरी-श्वरोरे, मत्थरतन सुखकार ॥ छ० ५ ॥

होरी—यत्

गुरुपूजा रचोरे सुज्ञानी, भलि हिय भक्ति भराणी ॥ श्रीजिनकुशल सूरीश्वर साहिब, खरतर गच्छ राजानी । देश २ में थानक गुरुका, शोभा जग पहिचानी, सदा रवि तेज समानी ॥ गु० १ ॥ केसर चन्दन मृगमद भली चरणन पूजा रचानी ॥ धूप दीप वलि आगे ढोवो, बहु विध पुष्प चढानी, भला फल भेट धरानी ॥ गु० २॥ वाट घाट मे परचा पूरक, हाजिर होत सहानि ॥ जिन सौभाग्य सूरिके साहिब वाछित काज करानी, सदा गुरु मेहर लखानी ॥ गु० ३ ॥

वेराग—पद

कुशल गुरु अब मोहि दरिशन दीजे ॥ ऐसी भांति करो मेरे साहिब, ज्यु मन मुद्द पतीजे ॥ कु० १ ॥ जल दातार बिरुद अमृतरस, श्रवण अञ्जली भर पीजे ॥ गुरतरु मम दरशन बिन देखे, कहो नयन किम रीझे ॥ कु० २ ॥ परम दयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुनीजे ॥ परम भक्त गुरुराज तुमारो, अपनो कर जानीजे कु० ॥ ३ ॥

भैरवी—तेताला

कुशलगुरु कुशल करो भरपूर। सेवक जन मन वंछित पूरण समर्थ हाथ हजूर ॥ परम दयाल प्रभरम पूरण अशुभ हरण भय दूर। संघ उदय कर सदगुर मेरा सिनवे जिनचन्द्र सूर ॥

आसावरी — धमाल

श्री गणधर गुरु कुशल सूरीन्द्रके चरण कमल पर वारी। केसर चन्दन अक्षत कुकुम जल भरी कञ्चन झारी ॥ देवके आगे मङ्गल दीपक फूल धरो फूलवारी ॥ १ ॥ ऐसी भांति करो विध पूजा आन चित्त एक

वारी। राज कहत मेरे परम गुरुरी बार २ बैलिहारी ॥ २ ॥

भैरवी—धमाल

कुशल गुरु दरशन दीजे हो। खरतर गच्छपति कुशल सुरीन्द गुरु, मुझ पर महेर धरीज हो। पतित उधारण विरुद तुमारो, इतनी अरज सुणीजे हो ॥ कु० १ ॥ आधि व्याधि अरु द्वेषी दुश्मन, ए सब दूर हरीजे हो। खेमरतन सेवकहु निशदिन, सदगुरु मानिध कीजे हो ॥ कु० २ ॥

विभास—झापताल

कुशल गुरु ध्याइये, कुशल मङ्गल करन, खरतर गच्छ में, अधिक राजे। भाव मनमें धरी अगर केसर करी पूजता मन तणा दु"ख भाजे ॥ कु० १ ॥ विकट संकट टले सजन आनी मिले, आपना भक्तनी आश पूरे। आण मन धार जे सेव गुरुनी करे, तेहनी आपदा जाय दूरे ॥ कु० २ ॥ सकल संसार दरबार सेवे सदा दिन २ जासु महिमा सवाई। माहरी लाज, गुरुराज तुमने अछे, एम करो जेम यश वडाई ॥ कु० ३ ॥ उद

कर उदय कर खरतर धनी, ख़ुरि जिनरङ्ग सेवक तुमारो। सदा चढ़ती कला, करो गुरु माहरी, विषम वैरी छुड़ा दूर वारो ॥ कु० ४ ॥

टोरी—तेताला

सदा सहाइ कुशल खरिन्दा गुरु दो दौलत गुरु रायजी। खाटे न खुटे खरची न टूटे, दिन २ वाधे सनाई जी ॥ सदा० १ ॥ मकजा सुत अरु सुन्दर नारी, शुभ परिकर सुखदायजी। मित्र समागम सुयश वधारण प्रति दिन हर्षित थायजी ॥ सदा० २ ॥ राजा प्रजा पाय नमे सहु गुरु समरण सुपसायजी। द्वेषी दुस्मन नृप भय पडिया, सदगुरु करे सहायजी ॥ सदा० ३ ॥ विषमी गिरिया सङ्कट पडिया, समरया आवे धायजी। भूख्या भोजन तरस्या पाणी, निरधनिया धन दायजी ॥ सदा ४॥ सघ सकलने द्यो सुख शाता जिम कीरति जग थायजी। थानक स्थिरता परिगल भोजन, पग २ कुशल सहायजी ॥ सदा० ५ ॥ अभय सदा सुखदाई सदगुरु नवनिध वंछित थायजी। सुमति सवाई नित घर सपत, दान विशाल लहायजी ॥ सदा० ६ ॥

भिभोटी —धमाल

आयो २ समरता दादाजी, आया० ॥ मरुट देश सेवरुकुं सद्गुरु, देशवरसे धायोजी ॥ सम० १ ॥ वरसे मेघ ने रात अन्धेरी वायु पण सजडी वागी, पञ्चनदी हम बैठे बेडी, टग्यि निज डगयोंजी ॥ सम० २ ॥ उद भणी पहुचावण आयो, गगतर सब सरायो ॥ समय-सुन्दर कहे कुशल ७ गुरु, परमानन्द सुरा पायोजी ॥ सम० ३ ॥

सिंधुरा—धमार

हुतो मोहि दर्शोनी माहरा रान, दादेर दरबार ॥ हुं ॥ छत्रपति ताहरे पाय नमेजी, सुरनर सारे सेव। ज्योति थारी जग जागतीर, दुनियामे प्रत्यक्ष देव ॥ हु १ ॥ चैमर अम्बर केवडाजी कस्तुरी कर्पूर। चापो चन्दन राय चमेली, भक्ति करु भरपूर ॥ हु० २ ॥ पागुलीयाने पाव ममाये, आधलीयाने आख। रुपहीनाने रुप देवे दादो, पक्षहीनाने पाख ॥ हु० ३ ॥ चन्द पटोधर साहिबोजी, श्रीजिनकुशल सुरीन्द ॥ आठ पहोर थाने ओलगुजी, रद्ध भणे राजिन्द ॥ हु० ४ ॥

प्रभाति

समरण होत सहाई कुशल गुरु ॥ स० ॥ चिंता चूरण मगल पूरण अब नही ढील रहाई ॥ कु० १ ॥ प्रगट प्रतापी इण जग माहि, भूतल में जस गाई। मेरे एक तुही मन रजन, नामे नव निध पाई ॥ कु० २ ॥ विघन विदारण सुरतरु स्वामी, अरज एहि उर लाई। परम कृपानिधि साहिब मेरे, चद अक्षय नित पाई ॥ कु० ३ ॥

पुनः

कुशलगुरु तुम साहब सुखदाई। परवत पर तेरो परचो दीठो, पल मे पीट गमाई ॥ कु० १ ॥ मानव दानव सद्कों मानत, दुनिया माहि दुहाई। सोमवार पूनम दिन पूजत, तिन घर सदा बधाई ॥ कु० २ ॥ मालपुरे थारो थानक दीपत युगप्रधान सवाई। चिंता चूरण आशा पूरण, जिनरग सूरि सहाई ॥ कु० ३ ॥

पुनः

सदगुरु करणा निधान, राखो लाज मेरी ॥ ए टेर ॥ जय जय जिन कुशल सूर, सुमरत हाजिर हजुर, महकत यश जिम कुपूर, महिमा जग तेरी ॥ सद० १ ॥

तुमहो दयाल, छिनमें करदो निहाल, सकट को चूर देवो, दौलतकी ढेरी ॥ सद० ॥ तुमहो सुरतरु समान, वछित फल देवो दान सेवकको दीन जान, मेटो भव फेरी ॥ सद० ३ ॥ शरण आयेकी राखो लाज, वछित सब पूरो काज, हर्षचन्द्र शरण गही, कीरति सुन तेरी ॥ सद० ४ ॥

दादा कुशलगुरु स्तवन

(गजल)

कुशल करना कुशल करना, कुशल गुरुराज शासनमें । तुम्ही हो शक्तिमय निज भक्त, विघ्नोंके विनाशन में ॥ टेर ॥ महा अन्धेरमे सोते, निरखलो अपने भक्तों को । उठाकर आप अब जल्दी, लिवा लाओ प्रकाशन में ॥ कु० १ ॥ अपूरव अपनी ज्योति का, दिखावें आप अब जल्वा । कि जिससे जोश भी फैले, हमेशा खूब तन-मन में ॥ कु० २ ॥ हैं भूले भक्त पर तुमको, भुलाना यों न लाजिम है । दुआ है आपसे इतनी, बढादो भक्त जन-धन मे ॥ कु० ३ ॥ सदा "हरि" आपकी स्वामी, दयाकी वेल भक्तों पे करे छाया, हरे माया, अशान्ति हो न जीवन मे ॥ कु० ॥

दादा कुशलगुरु स्तवन

कुशल गुरु क्यों न देते हो, कहो दर्शन मुझे अपना। अगरचे दूर रहना था, बनाया दास क्या अपना॥ जलीलों को जलाना ही, अगर मंजूर है तुमको। निरुद तब दीनबन्धु का, रखा फिर नाथ क्यों अपना॥ तुमारा मैं हुआ जब से, सदा तब से तडफता हूं। न तडफाना तुम्हें लाजिम, शरन दो देव अब अपना॥ मुसीबत मेट दो मेरी, दरश दो क्यों करो देरी? गुजारिश है कवीन्दर की, निभालो नेह बस अपना॥

दादा कुशलगुरु से प्रार्थना

आपके दर्शन बिना गुरुवर ! रहा जाता नहीं।
और दिल का हाल गैरो से कहा जाता नहीं॥
है परेशानी यही कैसे तुम्हें पाउं गुरो !
पन्थ ऐसा एक भी मेरी नजर आता नहीं॥
हैं जुदाई के जिगर मे जख्म भारी हो रहे।
उनकी जलनका जोश भी मुझसे सहा जाता नहीं॥
हैं कुशल गुरु आप फिर क्यों देर इतनी हो रही।
अब और आशामें प्रभो मुझसे रहाजाता नहीं॥

"हरि" पूज्य गुरुवर दासकी अरदास को सुन लीजिये।
मुक्तिदाता आप बिन वस और मन भाता नहीं ॥

दादा कुशलगुरु स्तवन

(गजल)

कुशल गुरराज जय तेरी, सदा दो शक्तियां मेरी ॥ टेर ॥ हृदय में ध्यान धरता हूं, उपाधि दूर करता हूं॥ मैं गाउ कीर्तिया तेरी, कुशल गुरुराज जय तेरी ॥ १ ॥ सदा तुझ नाम लेकरके मैं करता काम हूं जितने। सफल होते वही देखे, कुशल गुरुराज जय तेरी ॥ २ ॥ है तेरे मत्र की शक्ति, अजायब विश्वमे रोशन। मुझे उसका सहारा है, कुशल गुरुराज जय तेरी ॥ ३ ॥ तु ही सुख सिन्धु है भगवन्! परम 'हरि' पूज्य उपकारी। सहज मुक्ति वधू स्वामी, कुशल गुरुराज जय तेरी ॥ ४ ॥

ताल ठुमरी

सद्‌गुरुजी सुनो मोरी अरजी। स० ॥ टेर ॥ पहिले काम किये बहुतेरे, अपना बिरूद विचारी, पग २ चूक पडी सद्‌गुरुजी मैं मतलब का गरजी ॥ स० १ ॥ ध्यान तुमारो कबहु न ध्यायो, पूजा करी नहीं तेरी, तोही

सेवक वछित पूरणा, यही तुमारी मरजी ॥ म० २ ॥ निश्चय सेती तुम गुण गाय, तुरत कटत दुख वेडी, भक्त उधार कहावत जग म, ताहे करत हू अर्जी ॥ म० ३ ॥ और देवकी मैं न ध्याउ, शरण ग्रही मैं तेरी, दूर थकी मैं भेटण आयो, निपत दया मन तरजी ॥ स० ४ ॥ कुशल गुरु था मैं हू सेवक, लोक जाने सब कोई, धरमा रत्न की विनती सुनके, दरशन दो सद्गुरुजी ॥ स० ५ ॥

चाल छभरकी

दादा चिरजीवो, सेवक जन सुखदाई दरशन सदा देवो ॥ टेर ॥ दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समरया आपे सुख शाता, दादो जग नथर जग गुरु भ्राता ॥ दा० १ ॥ दादो परचा नग सगले पूरे, दादो सेवक ना सकट चूरे, दादा दुरित हरे सहुनी दूरे ॥ दा० २ ॥ दादो अलगा थी यात्री आवे, दादा देखी ने ते सुख पावे, म्हारा दादाजीनी जोड कोई नावे ॥ दा० ३ ॥ दादो राननगर माहे छाजे, जिहा सुजस नगारा नित वाजे, दादो छोगाला सेहर छाजे ॥ दा० ४ ॥ दादा धम केसर सूखड घोली, हाथे लेइ सोवन कचोली, पूजो दादाजी ने मिल

टोली ॥ दा० ५ ॥ दादो आरतिया आरति टाले, दादो सेवक जन ने प्रतिपाले, दादो जिन शासन नित उजवाले ॥ दा० ६ ॥ दादो महिमावत महाराजा, दादो राजे खरतरगछ राजा, दादो समरया सफल करे काजा ॥ दा० ७ ॥ दादो कुशल सूरिन्द बहु गुण धारी, दादो परतिख सुर तरु अवतारी, जाऊं दादाजीनी हूं बलिहारी ॥ दा० ८ ॥ दादो श्री जिनचद सुरिंद पाटे, दादो गाजे गुणियन गह गाटे, जसु थान सोहै जग थिर थाटे ॥ दा० ६ ॥ दादा महर निजर मुझ पर करिये, दादा आरति पीडा दुःख हरिये, दादा जिम जग जय कमला वरिये ॥ दा० १० ॥ दादा सेवक ने सानिध करजो, दादा दुश्मन ने दूरे हरजो, जिनचद ना मन वछित फलजो ॥ दा० ११॥

पुनः

आयो सहु श्रीसघ आस धरे, गुरु मौन रह्या कहो केम सरे, दरशन वहिलो सदगुरु दाखो, निज सेवक जाण महर राखो ॥ १ ॥ इण विखमी विरिया आय वणी केहनी करिये तुझ अरज धणी, हिव अलगा छो तो वेगा आवो, हिव ढील घडी भरम करावो ॥ २ ॥ तूं सद्गुरु

सम्यगढ मायो, कोईयन जाणं तुझने काचो, इण सङ्कट में आलस म करो, दादा दुश्मन ने दूर हरो ॥३॥ कोई गुरु पडी सद्गुरु हम सु, तो जिम रह सो तिण पर समसु, पिण हिवणा हठ थे मत ताणो, निश्चय पोता नो कर जाणो ॥ ४ ॥ आयासन श्रीसङ्घ अठा लगे, पाछा किम जावा इणं पगे, इण पर कग्यि गुरु अरज इसी, हिव सगला मेलो करो खुशी ॥ ५ ॥ जिन कुशल सुरीसर जग चावा, अपणायत कर वेगा आवो, जगला विरुद थे उजवालो, पर घल निज छोरू प्रतिपालो ॥६॥ गुण गाम गडाले ये गायो, सुणता सद्गुरु वेगो आयो, रानी हुय सगला रगरली, जिनचन्दनी आस्या सफल फली ॥ ७ ॥

राग जय जयवती

आज तो आनन्द मेरे, आई भली भावना ॥ आ० टेर ॥ भई जो कुशल गुरु, भेटन की कामना, कलियुग में सुरतरु दुरित को दावना ॥ आ० १ ॥ दादा को दरश पायो, लोचन कुं अधिक भायो, सुधा ते ~~~ सवायो, पूज्यां सुख पावना ॥ आ० २ ॥ श्री जिन

सर, सेवक को हो हजूर, दुरित हरण दूर, अविक बधावना ॥ आ० ३ ॥ कुंकुम चन्दन घसि, सरस गुलाब रसि उलसि उलसि पूज, गुरु गुण गावना ॥ आ० ४ ॥ प्यासे कू ज्यूं पाणी पावे, भूले कू राह बतावे, बन्धन छोडावे, दूर निछरे मिलावना ॥ आ० ५ ॥ लक्ष्मी वल्लभ की आस, पूरे सदा सुख वास, कविराज जसवास, जगत सुहावना ॥ आ० ६ ॥

देशी फलमलरी

गछपति खरतरगछ सिणगार, कीरत भूमडल कहे। ग० ॥ देखण तुझ दीदार, राजा राणा आगल रहे ॥ग० १॥ रतन कचोलो विमाल, केसर चन्दन घस भली। ग०। गू थ २ फूल माल, पूजं निर्मल मन करी ॥ ग० २ ॥ दश बगाला मझार, थू भ झलाहल दीपतो । ग० । परचा पूरण हार, इन कलिकाल नें जीपतो ॥ ग० ३ ॥ रहसु तुमारे पाय, दरशन दीजे मो भणी । ग० । पटधर कुशल सूरिंद, महिमा जस जग जागती ॥ ग० ४ ॥ आपे सदा जिनचन्द, चरण कमलनी विनती ॥ ग० ५ ॥

पुन'

कैसे २ अवसरमें गुरु राखी लाज हमारी। मों को सबल भरोसा तेरा, चन्दसूरि पटधारी ॥ कै० १ ॥ तुम विन और न कोई मेरे, यह जग मे हितकारी। मेरा जीवन हाथ तुम्हारे, देखो आप विचारी ॥ कै० २ ॥ आगे तो कई बार हमारी, चिन्ता दूर निवारी। अब की वेरिया भूल मत जावो, सद्गुरु परउपगारी ॥ कै० ३ ॥ अब की आप लाज गूजर की, रखिये गुरु यशधारी। मेरे कुशल सुरीन्द गुरु तेरा, बडा भरोसा भारी ॥कै०४॥

पुन'

सुगुरु जी समरथा सानिध कीजो। म्हाने दरसण वहलो दीजो ॥ सु० ॥ श्री जिनकुशल सूरीश्वर साहब, जिनचन्द सूरि पटधारी। सघ सकल ने आनन्दकारी भक्त जना सुखकारी ॥ सु० १ ॥ सुरतरु सम सेवा सुखदाई भक्त जना मन भाई। नव निधि रिद्धि सिद्धि वछित दाइ भीरु भञ्जन अधिकाइ ॥ सु० २ ॥ सकल जनाश्रय समरण साचो जाण्यो मैं निरधारी। समरथ सेवा सफल सदाई इम भाषे जगसारी ॥ सु० ३ ॥ 'आपद् हरण सरण

तुझ सेवा जग मे प्रगट कहीजे। कामित दायक कलि मे कीरति सुणता सुख लहीज ॥ सु० ४ ॥ दीन दयाल सर्व गुण लायक विरुद वडाइ लीजे। श्री जिनमहेन्द्र सूरि तणी हिवे आशा सफलो कीज ॥ सु० ५ ॥

पुन

कुशल करण मेरे परम गुरु की मेर २ वलिहारी ॥ कु० ॥ श्री जिनचन्द सुरींद पटधारी जिनशासन उजियारी। गाय नगर थिरथभ विराजे वारी जाउ वार हजारी ॥ कु० १ ॥ महिमा मेरु समान है जाकी कही न सकुं विस्तारी। श्री जिनकुशल सूरीश्वर साहिब सुणिये अरज हमारी ॥ कु० ॥ सुर सुख मगन लग्न तुझ लागी ध्याने दिया विसारी। ऐसे हो सदगुरु तुम नवि छाजे लाजे काण तुम्हारी ॥ कु० ३ ॥ निज गुण निज पद लज्जा अपनी रखिये विरुद सभारी। गिरुआ कबहु छेह न दाखे राखे मन वधारी ॥ कु० ४ ॥ मेरी चूक पर नजर न कीजे कीजे अनुग्रह भारी ॥ श्री जिनहर्ष सूरीश्वर सद्गुरु समरथा सानिधकारी ॥ कु० ५ ॥

रेखता

कुशल गुरु देवके दरसन, मेरा दिल होत है पर-
सन ॥ जगतमे या समो कोई, न दरसा नयन भर जोई
॥ १ कु० ॥ निरुद्ध भूमडले गाजे, फरसता पाप सहु
भाजे ॥ पूजता सम्पदा पावे, अचिन्त लक्ष्मी घर आवे
॥ २ कु० ॥ इके मुख गुण कहु केता, हिये मुझ ज्ञान
नहीं एता ॥ लालचन्दकी अर्ज सुन लीजे, चरण की
शरण मोहे दीजे ॥ चिन्तामणि रत्नको पायो, लालचन्द
ध्यानमे मन लायो ॥ ३ कु० ॥

पुनः

गुरुदेव मनाना साची सकलाई दादा देवकी ॥ गु० ॥
श्रीजिनचन्द्र पटाधर साहेब, श्रीजिनकुशल मुनीन्दा ॥
सुजस प्रगट है थारो जगमें, जैसे पूनमचन्दा ॥ गु० १ ॥
अष्टद्रव्यसे पूजा सारु, तुम देवन के देवा ॥ शरणागत
प्रतिपाल जगत म, नित प्रति मागु सेराजी ॥ गु० २ ॥
सेवक जन मन वछित पूरे, चिन्ता चूरे मेरी ॥ अष्ट
सिद्धि सुख सम्पति दाया, मैं सेवक हू तेराजी
॥ गु० ३ ॥ हृदय कमलमें ध्यान लगाउ, और देव

ध्याउ ॥ पूरण कृपा करो गुरु मुझपर, जिम वछित फल पाऊजी ॥ गु० ४ ॥ सेवककी यह अरज निनति, अर-धारी महाराज ॥ दरमन सदगुरु सेवा आपो सिद्ध होय सेवक काजजी ॥ गु० ५ ॥

पुनः

हाहे लाल श्री जिनकुशल सूरीश्वरू, सेवीजे मन धर भाव रे लाल ॥ प्रत्यक्ष परचा पूरवे इण कलियुग गुरु रायरे लाला ॥ श्री० १ ॥ केसर चन्दन घसी करी नववैवेद्य करी उदाररे लाला ॥ श्री ० २ ॥ थम भलो देराउरे शोभा बहु जेसलमेररे ला० ॥ मुलताने मारोटमे गुरु सोहे बीकानेररे लाला ॥ श्री० ३ ॥ जोधपुरने मेडत जैतारणने नागोररे ला० ॥ सोजतने पालीपुरे जालोरने श्री साचोररे लाला ॥ श्री० ४ ॥ राजनगरने सूरते खभाइत पाटण माहिरे ला० ॥ शत्रुंजे सोह सदा नवेनगर में उछाहरे लाला ॥ श्री० ५ ॥ इम पुर २ मे दीपतो दादाजी परतिख दवरे ला० ॥ इह एक आशा पूरवे तिण जग सहु सारे सेवरे लाला ॥ श्री० ६ ॥ नामे सङ्कट सवि टले तरस्या पावे नीररे ला० ॥ रणमे जे सम-

रण करे सदगुरु होवे तसु भीररे लाला ॥ श्री० ७ ॥
एम महिमा जग जेहनी जाण महुको नरनाररे ला० ॥
सुख संपति द सेवका बहु पुत्र परिवाररे लाला ॥श्री० ८॥
समरथा दरसन देइजे ए सेवकनी करज्यो साररे ला० ॥
राजसागर करजोडिने विनवे वारवाररे लाला ॥ श्री० ६॥

पुन.

श्री कुशल सूरि गुरु सुखकारी। जगमाहे तुम महिमा भारी ॥ १ ॥ जिनचन्द्र सूरीश्वर पटधारी। गुरु हितकारी पर उपगारी ॥ २ ॥ सुरतरु मम वछित दातारी और सहस किरण सम औतारी ॥ ३ ॥ आचारज छत्तीस गुणधारी। गुरु दूर करो विपता सारी ॥ ४ ॥ भट्टारक जङ्गम युगप्रधान। दाता तुम चिंतामणि समान ॥ ५ ॥ करुणानिधि ज्ञान सब गुण निधान। दीपत हैं तेज दिन-कर समान ॥ ६ ॥ सब राव राणा सुर नरेश। पूजत हैं चरण थारे हमेश ॥ ७ ॥ पल मे दूर हो सगले क्लेश। गुरु समस्त विपद न रहे लेश ॥ ८ ॥ दादा अब मेहर नजर कीजे। इतनी विनती मोरी सुन लीजे ॥ ६ ॥ गुरु जसधारी ये जस लीजे। मानक को वेग दरस दीजे ॥ १० ॥

पुन:

सतगुरु सुनिये अरज हमारी विपदा मारी कीजे दूर। कुशल सूरि गुरु नाम तिहारो कुशल करो भरपूर। टेक। सानिध कीजे ये यश लीजे दीजे सङ्कट चूर ॥सत० १ ॥ गुरु दातार तुमे जो ध्यावे दौलत मिले जरूर। चाकर जान दास माणक की कर अरज मजूर ॥सत० २॥

पुनः

वदो गुरु चरण कमल भविजन मन लाई। टेक। साचे जिन कुशल सूर, ध्यावत दुख होत दूर, सङ्कट को करत चूर, सतगुरु सुखदाई ॥ वदो० १ ॥ ऐसो दादा को नाम, जपत सिद्ध होत काम, सुमिर सुमिर आठो याम, ये ही नाम भाइ ॥ वदो० २ ॥ धर चित सतगुरु को ध्यान, छिन मे होवे कल्याण, दाता गुरु दयावान, देत दु:ख मिटाइ ॥ वदो० ३ ॥ श्री
राखो आज मेरी लाज, अरज प..
गुनगाई ॥ वदो० ४ ॥

कुशल गुरु अर्ज

सूरीश्वर सेवा मिली ॥ मन वछित आशा सुफल फली। आनन्द भयो मन रगरली ॥ १ ॥ तुम महिमा अगम अपार भला। लिया नाम तिरे पाषाण शिला ॥ पूजे जे चरण कमल चित्त ला। ते पामे रिद्धि सिद्धि कमला ॥ २ ॥ गुरु ढुण फिरयो मैं जग सगला। तुम सम दाता नहीं और मिला ॥ तुम नाम की देखी अधिक कला। समरत गुरु सङ्कट निकट टला ॥ ३ ॥ गुरुदेव को नाम चित से सुमरे। मन वछित कारज सकल सरें। चित्त धारत आरत तुरत टरे। पूरण निधि से भडार भरे ॥४॥ तुम महिमा गुरु गुनवान सदा। ज ध्यावे न पावे कष्ट कदा ॥ करके दरशन भई अङ्ग मुदा। चित चाहत सेव करू मैं सदा ॥ ५ ॥ जाके मन मे गुरुदेव रमे। वह नर भवबन मे नाही भमे ॥ गुरु जान के दीनदयाल तुम्हे। राजा राणा नरनार नमे ॥ ६ ॥ कर्मों के फद पडे हैं घने। गुरुदेव न सेव तुम्हारी बने ॥ मेरी करनी अव-धारो न मने। दाता मन्दिर भर देवो धने ॥७॥ करुणा-निधि आप को जो ध्यावे। वह नर वछित फल पावे ॥ कोइ कष्ट रोग दुःख नहीं आवे। जो चित से नित गुरु

गुण गावे ॥ ८ ॥ सब भूत और प्रेत पिशाच डरे। डाकिन शाकिन नही पीड करे ॥ जे आपद काल तुमे सुमरे। निश्चय सब सङ्कट विकट टरे ॥ ६ ॥ कर्मो के प्रहार क्हा लो सहे। गुरुदेव विना अब किसे कहे ॥ यही चाहत चित चरन मे रहे। सुख सपति दौलत सुमति लहे ॥ १० ॥ राजत गुरु थु भ अधिक नोरे। निज दास की सब आशा पूरे॥ दु ख दारिद्र सकल हरे दूरे। वछित फल दे चिन्ता चूरे ॥ ११ ॥ देशे देशे ग्रामे नगर। गुरु कीर्त्ति फैल रही सगरे। जिन चद सूरीश्वर पाद धरे ॥ सेवक की आरत सकल हर ॥ १२ ॥ श्री खरतर गच्छ शजा आगे। नही ठहर भूतादिक भागे ॥ जे सतगुरु के पाये लागे। शुभ भाव दशा उनकी जागे ॥ १३ ॥ सहु देश नगर अरु पट्टन ग्रामे। देवल सोह ठाम ठामे ॥ गुरु नाम जप जे हित कामे। मन वछित वर वह नर पामे ॥ १४ ॥ जे सतगुरु ध्यान हिरद राखे। नह सेवक शिव सुख फल चाखे ॥ दादा जिन कुशल सूरीद साखे। मानक चाकर इम पद भाखे ॥ १५ ॥

पुन

विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली, शुभ संगे पुण्यदशा सफली। जिन कुशल सूरि गुरु अतुल बली, मन वंछित आश फली ॥ १ ॥ मंगल लील सबै विपुला, नव नव महोत्सव राज्यकला। सुपसाये गुरु चढ़ति कला, सुरुलानी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सवही दिन थावे सवला, मदवास कपूर तणा दुरला। हय गय रथ पायक बहुला, कल्लोल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ सिरे चमर निशान ढुले, निर्भय दरबार खडा पहरे। जय २ कर जोडि उचरे, सानिध्य गुरु सब काज सरे ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पान सदा, दुख रोग दुष्काल न होय कदा। अविचल उत्कृष्ट अंग मुदा, गुरु पूरण दृष्टि प्रसन्न सदा ॥ ५ ॥ धम २ मादल नाद घूमे, वत्तीसे नाटक रंग रमे। प्रगट्यो पुण्य प्रताप इसे, सबला अरियण ते आय नमे ॥ ६ ॥ तन सुख मन सुख चीर तनें, पहिरे वेलाउल होय रणे। ध्यावो कुशल गुरु एक मने, जृंभक सुर मन्दिर भरे धने ॥ ७ ॥ तत खिण घन गर्ज्यो आवे, करि श्याम घटा मेह वरसावे। तिसिया तोय तरत पावे,

त्रिजग सुजस गावे ॥ ८ ॥ लहरया जल कल्लोल करे, प्रवहण भय मायर मध्य डरे। तुटता वाहण जे ममरे, ते आपद निश्चय से उतरे ॥ ९ ॥ खट २ खडग प्रहार वहे, सौदामिनी जिम समसेर महे। कुशल २ गुरु नाम कहे, ते क्षेम कुशल रण मध्य लहे ॥ १० ॥ शुभ सकल परचा पूरे, श्री नागपुरे सङ्कट चूरे। मङ्गलोरे अधिके नूरे, देराउर भय टाले दूरे ॥ ११ ॥ वीरमपुर वाने सुधरे, खभायतपुर विक्रमनयरें, जिनचन्द सूरि पाटे पवरे, जसु कीरति मही मण्डल पसरे ॥ १२ ॥ पूर्व पश्चिम दक्षिण आगे, उत्तर गुरु दीपे सौभागे। दशोदिशी जन सेवा मागे, श्री खरतर गच्छ महिमा जागे ॥ १३ ॥ पुर पट्टन जनपद ठामे, गाजे कुशल नयर गामे। पूजे जे नर हित कामे, ते चक्रवर्ति पदवी पामे ॥ १४ ॥ श्री जिन कुशल सूरि सारें, सेवक जनने सुखिया राखें। समरया गुरु दरसन दाखे, श्री साधुकीर्ति पाठक भाखे ॥ १५ ॥

श्री जिनकुशल सूरिजी का उत्पत्ति स्तोत्र

रिसह जिणेसर सो जयो, मङ्गल केलि निवास।

कुशले धन वरसत, कुशल धन धन्न रु वन्नो ।
कुशले घोडा थट्ट, कुशल पहरीया सुवन्नो ॥
एरि इमो नाम सदगुरु तणो, कुशले जग रलियामणो ।
भट्टारक श्रीजिन कुशल सूरि नाम ग्रहणें करी, घर घर होत वधामणो ॥

कलश

दादाजी दीधा दौलत थाय, बाकी र वेला न पडे थाय, पूजो मन रली, हा हो दादा कुशल सूरिंद, पूज मन रली ॥ टेर ॥ दादोजी तुरत गमावे पीड, दादोजी भांजे सगली भीड ॥ पूजो । म० १ ॥ केसर चन्दन अगर कपूर, पूजता दादाजी हावे हजूर ॥ पू० । २ ॥ पूनम २ नें सोमवार, आय जुडे दादे [illegible] प० । म [illegible]
वरसावे मेह, दादो[illegible]
जी रानगर दीवान,
दादेजी [illegible]
पू० । ४
म्हारा [illegible]

कवित्त

गज कुम्भ ठौर २, ऐसो देव नहीं और, दादो २ नामते जगत यश गाया है। आपणे ही भाय आय, पूजे लक्ष लोक पाय प्यासनको रण माझ पानी आन पायो है। बाट घाट शत्रु थाट, हाट पुर पाटनमें, देह गेह नेह से कुशल वरतायो है। धर्मसिंह ध्यान धरे, सेवकर्कू कुशल करे, साचो जिन कुशल सूरि, नाम यों कहायो है ॥ १ ॥

छप्पय

कुशल अङ्ग उछरङ्ग, कुशल वाणिज व्यापारे।
कुशल देव देहरे, कुशल धन राज दुवारे ॥
पुण्य पसाये कुशल, २ श्रीसंघ भणीजें।
वाहण आवे कुशल, कुशल घर घर गाईजे ॥
श्री जिनचन्द्रसूरि पुहपट्टधर, नाम मत्र आरति टले।
श्री जिनकुशल सूरि पाय पूजता, नवनिधान लक्ष्मी मिले॥

पुन

कुशल चडो मसार, कुशल मजन घर चाहे।
कुशले मयगलवार, लच्छि घर कुशले आवे ॥

कुशले धन वरसत, कुशल धन धन्न रु वन्नो ।
कुशलें घोटा थट्ट, कुशल पहरीया सुवन्नों ॥
एरि इसो नाम सदगुर तणो, कुशले जग रलियामणो ।
भट्टारक श्रीजिन कुशल सूरि नाम ग्रहणें करी, घर घर होत वधामणों ॥

कलश

दादाजी दीधा दौलत थाय, चाकी रे वेला न पडे काय, पूजो मन रली, हा हो दादा कुशल सूरिंद, पून मन रली ॥ टेर ॥ दादोजी तुरत गमावे पीट, दादोजी भाजे सगली भीड ॥ पूजो । म० १ ॥ केसर चन्दन अगर कपूर, पूजता दादाजी होवे हजूर ॥ पू० ।२॥ पुनम २ ने सोमवार, आय जुडे दाद दरबार पू० । मुह माग्या वरसावे मेह, दादाजी साधे तूटा नेह ॥ पू० । ३ ॥ दादो जी राजनगर दीवान, पूज्या बोल चढ परमाण पू० । दादेजी रा सेवक होय, तेहने गज न सके कोय ॥ पू० । ४ ॥ जिन रग सूरि कहे कर जोड, कवण करे म्हारा दादेजी री होड ॥ पू० । ५ ॥

वधाई

आजकी घडि म्हारे हरष वधाई, गुरु दरशन पायो सुखदाई ॥ आ० १ ॥ ॥ गुरु जग नायक वछित दायक, गुणगणालकृत सहु मन भाई ॥ आ० २ ॥ उत्तम धर्म प्रभाव करीने, जैनी कुलकी रीत दिखाई ॥ आ० ३ ॥ गुरु प्रत्यक्ष सहु सघ सुख दायक, दश ? मे प्रगट रहाइ ॥ आ० ४ ॥ धन दिन आज सफल थयो माहरे, सुरतरु सम मिलिया फलदाई ॥ आ० ५ ॥ वछित पूरण सकट चूरण, सहु भवि मात पिता वरदाई ॥ आ० ६ ॥ कलकत्ता पुर मडन साहिब, कुशल करो मोहन गुण-गाई ॥ आ० ७ ॥

पुनः

आज तो वधाई मेरे रग वधाई, गुरुचरणा सुपसाये रे ॥ आ० ॥ मोतीडे मेह वूठारे ॥ आ० ॥ मगल आज मेरे घर फलीया, सुख सम्पति घर आईरे ॥ आ० १ ॥ हरखानन्द भयो दिल मेरे, शुद्ध समकित फल पाईरे ॥ आ० २ ॥ श्रीगुरु चरण कमल दरशनते, सुपति सहि

दिल आर्टर ॥ आ० ३ ॥ दादा श्री जिनयहीर सूरीश्वर दशोदिशि सुयश सवाईरे ॥ आ० ४ ॥

पुन•

आज आनन्द वधाईया, गुरु भेटे महाराज, आज आनन्द वधाईयां। चिन्ता चूरण आशा पूरण, एहि विरुद धराईया ॥ गु० १ ॥ नाम लेत नव निध सुख पावे, दरशन दूरित पुलाईया। आजकी घडिया सफल भई है, गुरु दरशन मैं पाईया ॥ गु० २ ॥ ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पति दीजे, मन वछित सुख दाईयां। सेवक कर जोडी इम विनवे, हरख २ गुण गाईया ॥ गु० ३ ॥

आरति

[१]

पहली आरति दादाजी की कीजे। दुख दहोग सब दूर हरीजे ॥ जैजै सदगुरु आरति कीजै। श्रीजिन दत्त-सूरि समरीजै ॥ जैं० श्री । १ ॥ बीजी बीज पडति धारा। भय वारण तूही सुख कारा ॥ जैं० । २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी। दूर हरो सब दुर्मति मेरी ॥ जैं० । ३ ॥ चौथी मुगल पूत जिय दायक। सुखवर हुकम धरे ज्यु पायक ॥ जैं० । ४ ॥ पाचमी पाच नदी जिण तारी। सघ सकलनी सकट वारी ॥ जैं० । ५ ॥ छट्टीथम्भो वज्र विदारी। विद्या पोथी परगट कारी ॥ जैं० । ६ ॥ सातमी चौसठ योगिनी साधी। सूरिमंत्र सुरनें आराधी ॥ जैं० । ७ ॥ इणविध सात आरति कीजै। मन वछित सपति फल लीजै ॥ जैं० । ८ ॥ जैन लाभ खरतर गणधारी। सद्गुरु चरण कमल बलिहारी ॥ जैं० । ६ ॥ इति ॥

[२]

जय २ मणिधारी, आरति करूं हितकारी, सुख सम्पति कारी ॥ जय० । १ ॥ गुण मनि आगर, महिमा सागर, भवि जन हितकारी । दीन दयाल दयाकर मोपर जिन शासनचारी ॥ जय० । २ ॥ ग्यारेमें सत्तानवे वर्ष उपनों हरख बधाई । बारेमें तेतीसे वर्ष सुर पदवी पाई ॥ जय० । ३ ॥ कर जोडी सेवक गुण गावे, मन वंछित पावे । श्री जिनचन्द्र कृपा कर मोपर, मङ्गल माला घर आवे ॥ जय० । ४ ॥

[३]

जय जय आरति सत गुरु तेरी, कर पूरण आशा मन मेरी ॥ लीला धर गजेन्द्र विख्याता । जयतिश्री वर सतगुरु माता ॥ १ ॥ संवत तेरेसें तीसे जाया । निव्यासी सूरि पद पाया ॥ २ ॥ वीर जिनेश्वर चौपन ठामे ॥ श्रीजिन कुशल सूरीश्वर नामे ॥ ३ ॥ छाजेहड़ गोत्री एक हदा । पटधारी जिन चन्द मुनीन्दा ॥ ४ ॥ कर जोडी सेवक गुण गावे । पूजत मन वान्छित फल पावे ॥ ५ ॥

आरति

[१]

पहली आरति दादाजी की कीजे। दुख दहोग मन दूर हरीजे ॥ जैजै सदगुरु आरति कीजै। श्रीजिन दत्त-सूरि ममरीजे ॥जै० श्री। १॥ बीजी बीज पडति धारा। भय नारण तू ही सुख कारा ॥ जै०। २॥ तीजी परचा पूरक तेरी। दूर हरो सब दुर्मति मेरी॥ जै०। ३॥ चौथी मुगल पूत जिय दायक। सुरवर हुकम धरै ज्यु पायक ॥जै०। ४॥ पाचमी पाच नदी जिण तारी। सघ सकलनी सकट टारी॥ जै०। ५॥ छट्ठीथम्भो वज्र विदारी। विद्या पोथी परगट कारी॥ जै०। ६॥ सातमी चौमठ योगिनी साधी। सुग्रिमन सुरनै आराधी ॥ जै०। ७॥ इणविध मात आरति कीजै। मन वछित सपति फल लीजै॥ जै०। ८॥ जैन लाभ खरतर गणधारी। सदगुरु चरण कमल वलिहारी ॥ जै०। ९॥ इति ॥